IIM JAMMU
सा विद्या या विमुक्तये
10 Years
CELEBRATING THE 10th YEAR OF EXCELLENCE

EFMD ACCREDITED | MBA

BUSINESS GRADUATES ASSOCIATION ACCREDITED

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू

Indian Institute of Management Jammu

हिंदी पत्रिका

त्रिकुटा

आत्मदीपः भव

संपादकीय समिति (भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू)

प्रो. श्याम नारायण लाल, अध्यक्ष मीडिया एवं प्रकाशन

डॉ. अनुजा अखौरी, उपाध्यक्ष, हिंदी कार्यव्यान समिति

शालिन एस. नायर, प्रशासनिक अधिकारी जन-सम्पर्क एवं प्रशासन

डॉ. आशीष कु. ईशर, राजभाषा अधिकारी

संकलन समिति

अभिनव पाण्डेय, एमबीए (एच ए एंड एच एम), द्वितीय वर्ष

प्रतिलिप्यधिकार

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू
सर्वाधिकार सुरक्षित
इस पुस्तक की किसी भी सामग्री, कविता, लेख, आलेख आदि को कॉपीराइट स्वामी की बिना लिखित अनुमति के किसी भी रूप में जैसे फोटोस्टेट, माइक्रोफिल्म, जेटोग्राफी या अन्य किसी रूप में किसी भी सूचना पुनर्प्राप्ति प्रणाली, इलेक्ट्रॉनिक या मेकैनिकल रूप में शामिल कर पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता है।

मूल रूप से भारत में प्रकाशित

पुस्तक : पत्रिका

© भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू

संस्करण: छठा

वर्ष: 2026

प्रकाशक: भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू

पुस्तक डिजाइन एवं मुद्रक:

सिग्नस एडवरटाइजिंग (इंडिया) प्रा. लि.

बंगाल इको इंटेलिजेंट पार्क, टावर-१, १३वां तल, यूनिट २९, ब्लॉक ईएम-३, सेक्टर-V

साल्टलेक, कोलकाता, पश्चिम बंगाल ७०००९१

सम्पादकीय

त्रिकुटा
“आत्मदीपः भव”

हमारे संस्थान की हिन्दी पत्रिका 'त्रिकुटा ' की पांचवां संस्करण को प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

पत्रिका के नाम के चयन के लिए संस्थान के सभी सदस्यों से सुझाव आमंत्रित किए गए थे। कुल 50 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं, जिनमें से श्री आशीष कुमार इशर द्वारा सुझाए गए “त्रिकुटा” नाम और टैगलाइन “आत्मदीपः भव” का चयन किया गया। त्रिकुटा पर्वत भारत के जम्मू और कश्मीर राज्य में स्थित है। यह हिमालय पर्वत श्रृंखला का हिस्सा है और पीर पंजाल रेंज से शिवालिक पहाड़ियों तक फैला हुआ है। कैलाश (6,697 मीटर), शिवलिंग (6,590 मीटर), और मेरु (6,481 मीटर) त्रिकुटा पर्वत की तीन प्रमुख चोटियाँ हैं। पहाड़ ग्लेशियरों का घर हैं, जिसमें मंदाकिनी नदी के स्रोत चोराबारी ग्लेशियर शामिल हैं। त्रिकुटा ब्रह्मा के घर महा मेरु (मेरु पर्वत) के आसपास के बीस पहाड़ों में से एक है। पहाड़ को दिव्य देवी दुर्गा का दसरा घर माना जाता है। वह बुराई को समाप्त करने के लिए तीन देवियों की शक्ति से बनाई गई थी; इसलिए पर्वत को त्रिकुटा कहा जाता है। भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू परिसर त्रिकुटा पहाड़ों की तलहटी में स्थित है। त्रिकुटा पहाड़ों की ऊंचाई भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू की दृष्टि का प्रतिनिधित्व करती है जो प्रबंधकों और उद्यमियों को विकसित करने की ओर सदैव अग्रसर है। पत्रिका की टैगलाइन 'आत्मदीपः भव' का अर्थ है स्वयं अपना प्रकाश बनना।

हम अपने संस्थान के निदेशक प्रो. (डा.) बी. एस. सहाय जी को सहृदय धन्यवाद देते हैं, जिनके बहुमूल्य सुझाव से पत्रिका का पांचवां अंक अभिरूपित हो पाया है। साथ ही हम उन सभी को सविनय आभार व्यक्त करते है जिन्होंने कविता, लेख, कहानी तथा चित्र द्वारा अपने विचारों को पत्रिका के पहले संस्करण में साझा किया है।

यद्यपि पत्रिका के प्रकाशन में हमनें सतर्क ता बरती है, फिर भी अगर कोई त्रुटि रह गयी हो तो हमें खेद है। आपसे अनुरोध है की पत्रिका को और बेहतर बना सके इसके लिए आप अपने सुझाव पाठक और आलोचक, दोनों प्रारूप में हमसे साझा करें (hindipatrika@iimj.ac.in)।

साधुवाद।

सम्पादकीय समिति

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू

अनुक्रमणिका

निदेशक का संदेश	3
टेस्टीमोनियल्स	4
◆ **हिंदी पखवाड़ा एवं अभ्युदयः युवा संसद 2025–** ***डॉ. अनुजा अखौरी,*** *उपाध्यक्ष, हिंदी कार्यव्यान समिति* ***डॉ. आशीष ईशर,*** *राजभाषा अधिकारी*	10
◆ **हिंदी पखवाड़ा : राजभाषा का गौरव और सांस्कृतिक धरोहर–** ***डॉ. अनुजा अखौरी,*** *उपाध्यक्ष, हिंदी कार्यव्यान समिति*	14
◆ **चुनाव सुधार–** ***आदित्य शर्मा,*** *एमबीए प्रथम वर्ष, एमबीएएचसी25004*	16
◆ **एनईपी– समावेशी एवं नवाचार–** ***वैदिक साहू,*** *आईपीएम 04, आईपीएम24129*	18
◆ **विकसित भारत–** ***मल्हार लांडगे,*** *आईपीएम 04, आईपीएम24067*	19
◆ **मीडिया की भूमिका–** ***गरिमा,*** *एमबीए प्रथम वर्ष, एमबीए25090*	20
◆ **खुशियों की पुनर्परिभाषाः आईआईएम जम्मू में 'आनंदम' और मानवीय शिक्षा का प्रतिमान–** ***प्रो. श्याम नारायण लाल,*** *अध्यक्ष, आनंदमः द सेंटर फ़ॉर हैप्पीनेस*	21
◆ **महिला सशक्तिकरणः समाज, अर्थव्यवस्था और नेतृत्व में बदलाव की चाबी–** ***डॉ. अनुजा अखौरी,*** *उपाध्यक्ष, हिंदी कार्यव्यान समिति*	25
◆ **धर्मेन्द्रः भारतीय सिनेमा के ही-मैन — शक्ति, संवेदना और सादगी की मिसाल–** ***शालिन एस. नायर,*** *प्रशासनिक अधिकारी जनसंपर्क एवं प्रशासन*	26
◆ **नाद-ए-वादियाँ–प्रकृति, नाद और आत्मा का सूफ़ियाना संवाद–** ***शालिन एस. नायर,*** *प्रशासनिक अधिकारी जनसंपर्क एवं प्रशासन*	32
◆ **आई आई एम जम्मू–** ***पप्पू कुमार यादव,*** *प्रशासनिक अधिकारी*	33
◆ **विकसित भारत @2047 : प्रशासनिक कर्मियों की भूमिका और उत्तरदायित्व–** ***साक्षी जाम्वाल,*** *एएओ (प्रशासन)*	35
◆ **पर्यावरण संरक्षण : प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य–** ***गरिमा कुशवाहा,*** *एएओ (स्थापना)*	36
◆ **पुस्तकालय हूँ मैं, मैं हूँ ज्ञान का खजाना–** ***नीरज,*** *वरिष्ठ पुस्तकालय एवं सूचना सहायक, नालंदा पुस्तकालय*	37
◆ **हम सबका भारत– डॉ. आशीष ईशर,** *राजभाषा अधिकारी*	38
◆ **अश्वयामाः एक अनंत संघर्ष–** ***अभिनव पांडे,*** *एमबीए एचए और एचएम (2024-26)*	39
◆ **संविधान दिवस – भारत–** ***अभिषेक सिंह दुबे,*** *विद्यार्थी – एमबीए 09*	40
◆ **घर से दूर, खुद के पास–** ***मानसी गुप्ता,*** *एमबीए24147*	45
◆ **मंज़िल की ओर–** ***मानसी गुप्ता,*** *एमबीए24147*	46
◆ **मैं रुकने वालों में से नहीं–** ***मानसी गुप्ता,*** *एमबीए24147*	46
◆ **बंधुत्व और विविधताः भारत की राष्ट्रीय शक्ति के स्तंभ–** ***श्री विजय अनंत कांबले,*** *प्रशासनिक अधिकारी – परियोजना*	48
◆ **उत्कर्ष की राह पर आईआईएम जम्मू–** ***डॉ अतनु दत्ता,*** *आईआईएम जम्मू*	51
◆ **क्या ही अनकही सी ये भावना–** ***वंदना एडविन,*** *निदेशक के सचिव*	52

निदेशक का संदेश

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥"
(श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 2, श्लोक 47)

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू की स्थापना वर्ष 2016 में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा की गई थी। आज संस्थान अपने स्थापना के **दसवें गौरवशाली वर्ष** में है। यह अवसर हमारे लिए केवल एक कालखंड की पूर्णता नहीं, बल्कि उत्कृष्टता, नवाचार, राष्ट्रीय प्रतिबद्धता और सतत प्रगति का प्रतीक है।

विगत एक दशक में भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू ने शिक्षण, शोध, कार्यकारी विकास और परामर्श के क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। वर्तमान में संस्थान 1200 से अधिक विद्यार्थियों को उद्योग-संगत, नवाचार-आधारित एवं वैश्विक मानकों के अनुरूप शिक्षा प्रदान कर रहा है।

वर्ष 2024–25 में संस्थान को दो प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय प्रत्यायन — Business Graduates Association (BGA) एवं EFMD — प्राप्त हुए हैं। यह उपलब्धि हमारी शैक्षणिक गुणवत्ता, प्रशासनिक पारदर्शिता तथा वैश्विक उत्कृष्टता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को प्रमाणित करती है।

हमें यह बताते हुए विशेष हर्ष हो रहा है कि **हिंदी पखवाड़ा 2025** के अवसर पर संस्थान द्वारा **युवा संसद (YUVA Sansad)** का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें राज्य एवं देश के विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों से लगभग **120 विद्यार्थियों** ने सक्रिय सहभागिता की। इस मंच के माध्यम से युवाओं को लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं, नीति निर्माण तथा राष्ट्रहित से जुड़े विषयों पर विचार-विमर्श करने का अवसर प्रदान किया गया।

युवा संसद की विभिन्न समितियों में निम्नलिखित राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर गहन परिचर्चा की गई:

- **चुनाव सुधार (संशोधन) अधिनियम, 2021** के आलोक में चुनाव सुधारों पर विमर्श
- लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में **मीडिया की भूमिका** पर परिचर्चा
- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 (NEP 2020)** के संदर्भ में समावेशी एवं नवाचार-आधारित शिक्षा प्रणाली पर संवाद
- **विकसित भारत @2047** के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु **युवा सशक्तिकरण, नीति नवाचार, कौशल विकास एवं राष्ट्र-निर्माण** पर विचार-विमर्श

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 'मन की बात' कार्यक्रम (2021) में कहा था—

"**आज के युवा भारत के भविष्य निर्माता हैं। युवा संसद जैसे कार्यक्रम उनके भीतर जागरूकता, विचारशीलता और संवाद की ताकत को बढ़ावा देते हैं। ये कार्यक्रम लोकतंत्र की नींव को मजबूत करने वाले अभ्यास हैं।**"

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू की युवा संसद इसी प्रेरक दृष्टिकोण का सजीव उदाहरण है।

राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से संस्थान द्वारा कर्मचारियों के लिए **हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं कार्यशालाओं** का आयोजन भी किया गया, जिससे संस्थान में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन मिला और एक सकारात्मक भाषाई वातावरण का निर्माण हुआ।

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू "विकसित भारत" के राष्ट्रीय संकल्प को साकार करने हेतु युवाओं को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए सक्षम, नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण तथा सामाजिक रूप से उत्तरदायी नागरिक के रूप में विकसित करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। अपने दसवें वर्ष में प्रवेश करते हुए, संस्थान आत्मविश्वास, नवाचार और राष्ट्रनिर्माण के संकल्प के साथ भविष्य की ओर अग्रसर है।

प्रो. विद्या शंकर सहाय
निदेशक, भारतीय प्रबंधन संस्थान, जम्मू

टेस्टीमोनियल्स

Darshan Vaja | MBA 1st year, MBA25288

IIM जम्मू की 10वीं वर्षगांठ पर आयोजित युवा संसद में भाग लेना मेरे जीवन का एक अत्यंत मूल्यवान अनुभव रहा। यहाँ विभिन्न विषयों पर हुई चर्चाओं ने मुझे सिखाया कि लोकतंत्र तभी जीवित रहता है जब नागरिक सक्रिय रूप से अपनी बात रखते हैं। इस कार्यक्रम ने न सिर्फ मेरे विचारों को विकसित किया, बल्कि सार्वजनिक मंच पर बोलने का आत्मविश्वास भी दिया। मैं इस अवसर के लिए पूरा धन्यवाद IIM जम्मू को देता हूँ।

Khushi Sharma | MBA 1st year, MBA25140

IIM जम्मू की युवा संसद ने मुझे शैक्षणिक और व्यक्तिगत, दोनों स्तरों पर समृद्ध किया। जिस तरह से विषय चुने गए, जिस प्रकार से प्रस्तुतियाँ हुईं, और जिस स्तर का संवाद बना, वह किसी भी राष्ट्रीय संस्थान की पहचान को दर्शाता है। Director प्रोफेसर बी. एस. सहाय सर की उपस्थिति और समर्थन ने सभी प्रतिभागियों में उत्साह भर दिया। मैं उन्हें हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

Vishesh Agrawal | MBA 1st year, MBAHC25092

युवा संसद के मंच पर खड़े होकर बोलना मेरे लिए केवल एक प्रतियोगिता नहीं था, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों को समझने की एक यात्रा थी। IIM जम्मू द्वारा 10वीं वर्षगांठ पर आयोजित इस कार्यक्रम ने हमें नीति, शासन, संविधान और सामाजिक मुद्दों पर गंभीरता से सोचने के लिए प्रेरित किया। इस आयोजन की योजना, संयोजन और संचालन अत्यंत शानदार था। मैं Director प्रो. बी. एस. सहाय सर का विशेष धन्यवाद करता हूँ, जिनकी दूरदर्शिता और समर्थन से ऐसा उच्च स्तर का आयोजन संभव हुआ।

Amit Meena | MBA 1st year, MBA25032

मैंने पहली बार किसी ऐसे कार्यक्रम में हिस्सा लिया, जहाँ संवाद, तर्क और तथ्य—तीनों को समान महत्व दिया गया। IIM जम्मू में आयोजित इस युवा संसद ने हमें भविष्य की नीतियों को समझने का एक वास्तविक मंच दिया। 10वीं वर्षगांठ celebration को इतने सार्थक तरीके से मनाना वाकई इस संस्थान की विशिष्ट सोच को दर्शाता है।

Nitin Purohit | MBA 1st year, MBA25178

इस कार्यक्रम में केवल बहस नहीं हुई, बल्कि सम्मान, धैर्य और विचारों की विविधता को अपनाने की सीख मिली। IIM जम्मू का सकारात्मक वातावरण और वहां के छात्रों की गर्मजोशी ने हमें यह महसूस कराया कि सीखने की कोई उम्र नहीं होती। 10 वर्षों की उपलब्धियों का जश्न मनाते हुए इतना शानदार आयोजन करना वाकई सराहनीय है।

Samantha Paul | NIFT Daman

इतने बड़े मंच पर बोलना, वह भी IIM जम्मू जैसे शीर्ष संस्थान में, मेरे लिए किसी सपने से कम नहीं था। यहाँ की अनुशासित व्यवस्था और सीखने का माहौल देखकर मैंने महसूस किया कि अगर मन में लगन हो तो कोई भी जगह बड़ी नहीं लगती। यह अनुभव मेरी सोच और व्यक्तित्व को आगे बढ़ाने में बहुत सहायक होगा।

Ankush Kumar Bawa | MBA 1st year, MBAHC25012

मेरे लिए यह आयोजन सिर्फ एक प्रतियोगिता नहीं था, बल्कि लोकतंत्र को महसूस करने का माध्यम था। IIM जम्मू के छात्रों और शिक्षकों ने हमें जिस प्रकार प्रोत्साहित किया, वह बहुत ही अपनत्व भरा था। इस कार्यक्रम से मैंने सीखा कि अपनी बात कहना जितना ज़रूरी है, उतना ही आवश्यक है दूसरों की बात सुनना।

Aasmi Abrol | MIET College Jammu

कार्यक्रम की उत्कृष्टता इसके हर पहलू में दिखाई दी, चाहे वह मंचीय व्यवस्था हो, संचालन हो, निर्णायक मंडल हो या प्रतिभागियों का दृष्टिकोण। IIM जम्मू ने 10 वर्षों की उपलब्धियों को अत्यंत सार्थक तरीके से मनाया है।

Ankur Sonar | MBA 1st year, MBAHC25011

एक प्रबंधन छात्र के रूप में, यह आयोजन मेरे लिए नेतृत्व, अभिव्यक्ति और विचार-विमर्श का वास्तविक प्रशिक्षण साबित हुआ। IIM जम्मू का यह कार्यक्रम न सिर्फ उच्च स्तर पर आयोजित हुआ, बल्कि इसने युवाओं में जिम्मेदारी और देश के प्रति संवेदनशीलता को भी बढ़ाया। Director सहाय सर के मार्गदर्शन के बिना यह संभव नहीं होता, उनके प्रति मैं गहरा आभार व्यक्त करता हूँ।

Sukhpreet Kaur | IPM 04, IPM24122

यह आयोजन मेरे लिए सीखने और स्वयं को परखने का मौका था। यहाँ हर छात्र को बराबर अवसर दिया गया और हर विचार को सम्मान मिला। IIM जम्मू का यह प्रयास युवाओं को आत्मविश्वासी और जिम्मेदार बनाता है।

Pushkar Jaiswal | IPM 04, IPM24091

युवा संसद ने मुझे समझाया कि किसी भी देश का भविष्य युवाओं की सोच पर निर्भर करता है। IIM जम्मू के इस आयोजन ने हमारी सोच को परिपक्व बनाया और हमें राष्ट्र–निर्माण की दिशा में सोचने के लिए प्रेरित किया। यह अनुभव सदैव मेरे साथ रहेगा।

Avni Sharma | IPM 04, IPM24025

मंच पर जाते समय मैं बहुत घबराई हुई थी, लेकिन IIM जम्मू के छात्रों और शिक्षकों के प्रोत्साहन ने मुझे आत्मविश्वास दिया। यह मेरे जीवन का पहला बड़ा मंच था, और इसे मैं हमेशा याद रखूँगी।

Manini Sharma | DPS Jammu

युवा संसद ने मुझे समझाया कि किसी भी देश का भविष्य युवाओं की सोच पर निर्भर करता है। IIM जम्मू के इस आयोजन ने हमारी सोच को परिपक्व बनाया और हमें राष्ट्र–निर्माण की दिशा में सोचने के लिए प्रेरित किया। यह अनुभव सदैव मेरे साथ रहेगा।

Vilina Singh | IPM 04, IPM24138

युवा संसद के विषय अत्यंत प्रासंगिक और ज्ञानवर्धक थे। चर्चाओं ने दिमाग खोलने का काम किया। IIM जम्मू की टीम ने इतने बड़े आयोजन को अत्यंत सुचारू रूप से संपन्न कराया। मैं विशेष रूप से Director सहाय सर का धन्यवाद करती हूँ, जिनकी प्रेरणा ने इस कार्यक्रम को ऊँचाई दी।

Hrijut Sharma | MBA 1st year, MBAHC25031

हमें यहाँ जो मंच मिला, वह न केवल अपने विचार रखने का अवसर था बल्कि दूसरों के दृष्टिकोण से सीखने का मौका भी था। यह कार्यक्रम युवाओं को तार्किक और प्रभावी संचार के लिए प्रेरित करता है। 10 वर्षों के इस महत्वपूर्ण पड़ाव पर IIM जम्मू की यह पहल अत्यंत उपयुक्त थी।

Sumita Pradhan | IPM 04, IPM24123

इस आयोजन ने मुझे समझाया कि लोकतंत्र केवल पाठ्यपुस्तकों में नहीं, बल्कि व्यवहार और संवाद में जीवित रहता है। IIM जम्मू का वातावरण बेहद सीख देने वाला था। ऐसे कार्यक्रमों से हम जैसे स्कूली छात्रों में जागरूकता बढ़ती है।

Harjas Singh Thind | IPM 04, IPM24049

युवा संसद के दौरान मैंने पहली बार महसूस किया कि भारत का लोकतंत्र कितना जीवंत है। संविधान, नागरिक अधिकार और राष्ट्रीय मुद्दों पर हुई चर्चाओं से मुझे नई दिशा मिली। IIM जम्मू को धन्यवाद, जिसने हमें इतना बड़ा और सम्मानजनक मंच उपलब्ध कराया।

Shashwat Tripathi | MBA 1st year, MBA25246

युवा संसद के माध्यम से मुझे अपने विचारों को स्पष्ट और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने का अवसर मिला। चर्चाओं में शामिल होकर मैंने महसूस किया कि संवाद ही किसी भी समस्या का वास्तविक समाधान हो सकता है। IIM जम्मू को इस बेहतरीन आयोजन के लिए धन्यवाद।

Shrishti Gupta | MBA 2nd year, MBA24254

IIM जम्मू की 10वीं वर्षगांठ पर आयोजित युवा संसद मेरे लिए प्रेरणा, सीख और आत्मविश्वास से भरपूर अनुभव रहा। मैंने महसूस किया कि युवाओं की आवाज राष्ट्र के विकास में कितनी महत्वपूर्ण है। मैं विशेष रूप से Director प्रो. बी. एस. सहाय सर का धन्यवाद करती हूँ, जिनके सतत समर्थन, मार्गदर्शन और विजन ने इस आयोजन को अद्भुत ऊँचाई दी।

Nirjhar Sadhu | MBA 1st year, MBAHC25049

इस कार्यक्रम ने मेरी करियर–दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मैंने प्रशासन, राजनीति और नीति–निर्माण के प्रति अपनी रुचि को पहचाना। IIM जम्मू जैसे श्रेष्ठ संस्थान में जाकर सीखना मेरे लिए बहुत गर्व की बात है।

MBA
जनमंच
विकसित भारत
अभियान

हिंदी पखवाड़ा एवं अभ्युदय: युवा संसद 2025

डॉ. अनुजा अखौरी | उपाध्यक्ष, हिंदी कार्यव्यान समिति
डॉ. आशीष ईशर | राजभाषा अधिकारी

भारतीय प्रबंधन संस्थान, जम्मू

भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIM) जम्मू द्वारा हिंदी भाषा के संवर्धन, सांस्कृतिक चेतना के प्रसार तथा युवा सशक्तिकरण के उद्देश्य से *हिंदी पखवाड़ा 2025 एवं अभ्युदय: युवा संसद 2025* का भव्य एवं समन्वित आयोजन किया गया। यह आयोजन न केवल भाषाई और साहित्यिक गतिविधियों का उत्सव था, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों, नेतृत्व विकास और राष्ट्रीय चेतना को सुदृढ़ करने की दिशा में एक सार्थक पहल भी सिद्ध हुआ।

हिंदी पखवाड़ा 2025

परिचय एवं उद्देश्य

हिंदी पखवाड़ा, राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा संचालित एक राष्ट्रीय कार्यक्रम है, जो प्रतिवर्ष 14 से 28 सितंबर तक मनाया जाता है। इसका उद्देश्य हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण एवं संवर्धन करना है।

प्रमुख उद्देश्य:

- हिंदी भाषा का विकास और प्रयोग बढ़ाना
- भारतीय सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परंपराओं का संरक्षण
- कर्मचारियों एवं युवाओं में भाषाई जागरूकता
- हिंदी साहित्य के प्रति रुचि का विकास
- राष्ट्रभाषा के प्रति सम्मान और आत्मीयता का संचार

IIM जम्मू में आयोजन

IIM जम्मू ने हिंदी पखवाड़ा 2025 को रचनात्मक, समावेशी और व्यापक स्वरूप प्रदान किया। संस्थान की विभिन्न समितियों द्वारा निम्नलिखित प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों का सफल आयोजन किया गया:

- कवि सम्मेलन
- निबंध लेखन प्रतियोगिता
- कविता पाठ प्रतियोगिता
- पुस्तक समीक्षा एवं चर्चा
- वाद-विवाद प्रतियोगिता
- कहानी कथन प्रतियोगिता (अतिरिक्त)

प्रमुख कार्यक्रमों का विवरण

कवि सम्मेलन | 14 सितंबर 2025

हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ कवि सम्मेलन से हुआ, जिसमें पारंपरिक एवं आधुनिक काव्य शैलियों का सुंदर समन्वय देखने को मिला। छात्रों एवं कर्मचारियों की सक्रिय सहभागिता ने कार्यक्रम को जीवंत बना दिया।

मुख्य विशेषताएँ:

- विविध काव्य शैलियों की प्रस्तुति
- राष्ट्रीय एवं सामाजिक विषयों पर रचनाएँ
- हिंदी साहित्य के संरक्षण एवं संवर्धन का संदेश

निबंध लेखन प्रतियोगिता

राष्ट्रीय एवं सामाजिक महत्व के विषयों पर आधारित इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने गहन विचारशीलता और उत्कृष्ट भाषाई क्षमता का प्रदर्शन किया।

प्रमुख विषय:

- विकसित भारत में युवाओं की भूमिका
- सांस्कृतिक संरक्षण और आधुनिकता
- पर्यावरण एवं सतत विकास
- शिक्षा और सामाजिक समावेशन

कविता पाठ प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता ने हिंदी काव्य की भावनात्मक शक्ति को सजीव किया। प्रतिभागियों ने शुद्ध उच्चारण, भावाभिव्यक्ति और प्रभावशाली प्रस्तुति के माध्यम से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया।

पुस्तक समीक्षा एवं चर्चा

इस सत्र में प्रतिभागियों ने हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियों का विश्लेषण कर साहित्य और समकालीन समाज के संबंध को रेखांकित किया। कार्यक्रम ने आलोचनात्मक सोच और साहित्यिक समझ को प्रोत्साहित किया।

वाद-विवाद प्रतियोगिता

राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर आधारित इस प्रतियोगिता में तार्किक विश्लेषण, वैचारिक विविधता और सम्मानजनक संवाद का उत्कृष्ट उदाहरण देखने को मिला।

कहानी कथन प्रतियोगिता (अतिरिक्त)

प्रतिभागियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी को देखते हुए कहानी कथन प्रतियोगिता को अतिरिक्त कार्यक्रम के रूप में शामिल किया गया। इसने भारतीय मौखिक परंपरा को सशक्त मंच प्रदान किया।

हिंदी पखवाड़ा: पुरस्कार वितरण

प्रतियोगिता	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	सांत्वना
निबंध लेखन	शालिन एस. नायर	गरिमा कुशवाहा	मनबीर कौर	तरुण कांती कुजूर
कविता पाठ	अनंत श्रीवास्तव	अमन कुमार सिंह	अभिषेक सिंह दुबे	प्रदीप सैनी
पुस्तक समीक्षा	संदीप सिंह जमवाल	शशांक मिश्रा	शिवम सोनी	प्रो. संजय गुप्ता
वाद-विवाद	विजय अनंत कांबले	अनन्या तिवारी	तन्वी कौशिक	दिव्यांक अग्रवाल
कहानी कथन	तुषार	मोहद हसीन	नीरज	सुबी प्रकाश

अभ्युदय: युवा संसद 2025

आयोजन तिथि: 20–21 सितंबर 2025

प्रतिभागी: लगभग 150 विद्यार्थी (देशभर के विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों से)

अभ्युदय: युवा संसद 2025 IIM जम्मू की एक दूरदर्शी पहल थी, जिसका उद्देश्य युवाओं को लोकतांत्रिक प्रक्रिया, नीति-निर्माण और राष्ट्रीय मुद्दों से प्रत्यक्ष रूप से जोड़ना था।

कार्यक्रम का महत्व

- लोकतांत्रिक प्रक्रिया की व्यावहारिक समझ
- नेतृत्व, वाद-विवाद एवं निर्णय क्षमता का विकास
- संवैधानिक मूल्यों एवं राष्ट्रीय चेतना का संवर्धन

समितियाँ एवं विषय

1. A.I.P.P.M समिति

विषय: चुनाव सुधार (संशोधन) अधिनियम, 2021 के आलोक में चुनाव सुधार

2. लोकसभा समिति

विषय: लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में मीडिया की भूमिका और जिम्मेदारी

3. जनमंच समिति

विषय: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में समावेशी एवं नवाचार-आधारित शिक्षा

4. I.P.C समिति

विषय: विकसित भारत @2047 – युवा सशक्तिकरण और राष्ट्रीय विकास

प्रतिभागियों ने इन विषयों पर गहन, संतुलित और दूरदर्शी परिचर्चा प्रस्तुत की, जिससे कार्यक्रम अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध हुआ।

प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया

प्रतिभागियों ने युवा संसद को एक जीवन-परिवर्तनकारी अनुभव बताया। उन्होंने इसे विचारों की अभिव्यक्ति, संवाद और लोकतांत्रिक समझ के लिए एक प्रेरणादायक मंच माना।

हिंदी पखवाड़ा 2025 और अभ्युदय: युवा संसद 2025 ने IIM जम्मू में भाषा, संस्कृति और लोकतांत्रिक मूल्यों का एक सशक्त वातावरण निर्मित किया। यह आयोजन इस विश्वास को सुदृढ़ करता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्र निर्माण भी है।

हिंदी हमारी सांस्कृतिक आत्मा है और युवा भारत की शक्ति। लोकतांत्रिक संवाद, भाषाई सम्मान और युवा सहभागिता के माध्यम से ही एक सशक्त, समावेशी और विकसित भारत का निर्माण संभव है।

जय हिंद!

हिंदी पखवाड़ा : राजभाषा का गौरव और सांस्कृतिक धरोहर

डॉ. अनुजा अखौरी | उपाध्यक्ष, हिंदी कार्यव्यान समिति

भारत एक ऐसा देश है जिसकी पहचान उसकी भाषाई और सांस्कृतिक विविधता में निहित है। यहाँ विभिन्न भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं, किंतु हिंदी एक सेतु के रूप में कार्य करती है, जो देश के विभिन्न हिस्सों को जोड़ती है। हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, परंपरा और राष्ट्रीय एकता की संवाहक है। इसी महत्व को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक वर्ष 14 से 28 सितंबर तक हिंदी पखवाड़ा मनाया जाता है। इसका उद्देश्य हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना और इसे राजभाषा के रूप में और अधिक सुदृढ़ बनाना है।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 में स्पष्ट प्रावधान है कि भारत की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। यद्यपि अंग्रेज़ी का भी एक निश्चित अवधि तक सहायक भाषा के रूप में उपयोग का प्रावधान रखा गया था, किंतु राजभाषा के रूप में हिंदी का महत्व सर्वोपरि है।

भारत सरकार का शिक्षा मंत्रालय और राजभाषा विभाग समय-समय पर सभी मंत्रालयों, विभागों, सार्वजनिक उपक्रमों और शैक्षणिक संस्थानों को निर्देश जारी करते हैं कि वे हिंदी पखवाड़ा आयोजित करें। इस अवधि में निबंध लेखन, वाद-विवाद, भाषण, हिंदी नोटिंग-ड्राफ्टिंग कार्यशालाएँ, कवि सम्मेलन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इन गतिविधियों का उद्देश्य केवल प्रतियोगिता तक सीमित नहीं है, बल्कि सरकारी कार्यों और दैनिक जीवन में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना भी है।

आज के युवा तकनीक, इंटरनेट और वैश्वीकरण की दुनिया में जी रहे हैं। अंग्रेज़ी और अन्य विदेशी भाषाओं का प्रभाव बढ़ रहा है। ऐसे समय में हिंदी युवाओं को अपनी जड़ों से जोड़े रखती है। हिंदी में निहित साहित्य, गीत, कविता और लोककथाएँ न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि उनमें जीवन-मूल्य, नैतिक शिक्षा और राष्ट्रीय भावना भी संचारित होती है।

महाकवि तुलसीदास की पंक्तियाँ –

"मातृभाषा सब भाषा प्रगटै, जनु धरि जननी को अंचल जगटै।"

स्पष्ट करती हैं कि मातृभाषा ही वह आधार है, जिसके माध्यम से अन्य भाषाओं को आत्मसात किया जा सकता है। अतः युवाओं के लिए हिंदी केवल भाषा नहीं, बल्कि सीखने और समझने की एक सशक्त नींव है।

प्रसिद्ध कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने भी युवाओं को संबोधित करते हुए कहा था –

"यदि देश को संगठित करना है, तो एक ऐसी भाषा चाहिए जो हृदय से हृदय को जोड़े, और वह भाषा हिंदी है।"

यह संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना स्वतंत्रता के समय था।

भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह संस्कृति और परंपरा की वाहक होती है। भारतीय संस्कृति की गहराई को समझने के लिए हिंदी और संस्कृत दोनों का ज्ञान आवश्यक है। उपनिषदों और पुराणों से लेकर आधुनिक हिंदी साहित्य तक, हमारे मूल्य, परंपरा और ज्ञान की धरोहर इन्हीं भाषाओं के माध्यम से जीवित है।

संस्कृत का एक श्लोक है –

"संस्कृतेः स्थितिर्यत्र तत्र राष्ट्रस्य स्थितिः"

अर्थात जहाँ संस्कृति सुरक्षित है, वहीं राष्ट्र सुरक्षित है।

भाषा ही संस्कृति को सुरक्षित रखती है। इसलिए हिंदी का संवर्धन केवल भाषा की रक्षा नहीं, बल्कि संस्कृति और परंपरा की रक्षा भी है।

हिंदी लोककथाओं, दोहों और कविताओं में निहित ज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा है। कबीर के दोहे, रहीम के नीति-वचन और सूरदास की भक्ति रचनाएँ हमें बताते हैं कि भाषा हमारे जीवन-दर्शन का आधार है। यदि युवा पीढ़ी इनसे दूर हो जाएगी, तो हमारी संस्कृति की जड़ें भी कमजोर होंगी।

आज विज्ञान, प्रौद्योगिकी, प्रशासन, व्यवसाय और मीडिया के क्षेत्र में हिंदी ने अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है। इंटरनेट और सोशल मीडिया पर हिंदी का उपयोग तेजी से बढ़ा है। विश्वभर में बसे भारतीय प्रवासी हिंदी को अपनी पहचान और संस्कृति से जुड़ने के साधन के रूप में देखते हैं।

फिर भी यह देखा जाता है कि हिंदी के प्रयोग में हम स्वयं संकोच अनुभव करते हैं। यह प्रवृत्ति बदलनी होगी। हिंदी को अपनाना ही आत्मगौरव का प्रतीक होना चाहिए। जैसा कि कवि दिनकर ने कहा था –

"जब नश्वर देश मिटते हैं, तब भी संस्कृति बचती है। संस्कृति के बल पर ही राष्ट्र अमर बनता है।"

यह पंक्तियाँ हमें स्मरण कराती हैं कि भाषा और संस्कृति की रक्षा करना राष्ट्र की अमरता सुनिश्चित करना है।

हिंदी पखवाड़ा केवल एक औपचारिक आयोजन नहीं है। यह अवसर है कि हम स्वयं संकल्प लें-

- अपने कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिक प्रयोग करेंगे।
- शिक्षा और शोध में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देंगे।
- युवाओं को हिंदी साहित्य और परंपरा से जोड़ने के प्रयास करेंगे।
- दैनिक जीवन में हिंदी का प्रयोग गौरव के साथ करेंगे।

यह जिम्मेदारी केवल सरकार की नहीं, बल्कि हम सबकी है। समाज के हर वर्ग को हिंदी के संवर्धन और प्रयोग में योगदान देना चाहिए।

हिंदी पखवाड़ा हमें यह स्मरण कराता है कि हिंदी केवल राजभाषा नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा है। यह हमारी सांस्कृतिक पहचान, परंपरा का संवाहक और युवाओं के लिए जीवन मूल्यों का स्रोत है। हिंदी का प्रचार-प्रसार करना केवल एक भाषा को बढ़ावा देना नहीं, बल्कि भारत की संस्कृति, एकता और गौरव को सशक्त करना है।

हिंदी का सम्मान, भारत का सम्मान है। हिंदी को अपनाना, अपनी संस्कृति और परंपरा को जीवित रखना है।

चुनाव सुधार

चुनाव सुधारों पर परिचर्चा, विशेष रूप से चुनाव सुधार (संशोधन) अधिनियम 2021

आदित्य शर्मा | एमबीए प्रथम वर्ष, एमबीएएचसी25004

कोई भी लोकतंत्र तभी सुदृढ़ माना जाता है जब उसके चुनाव न केवल स्वतंत्र और निष्पक्ष हों, बल्कि पारदर्शी, विश्वसनीय तथा तकनीकी रूप से आधुनिक भी हों। भारत जैसे विशाल लोकतांत्रिक देश में चुनाव प्रक्रिया को समय–समय पर अद्यतन और सुदृढ़ बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है, और इसी दिशा में चुनाव सुधार (संशोधन) अधिनियम 2021 एक महत्वपूर्ण कदम माना जाता है।

यह अधिनियम मुख्य रूप से चार बड़े सुधारों पर आधारित है, मतदाता सूची को आधार से जोड़ना, साल में चार बार मतदाता सूची में पंजीकरण, सेना एवं अर्धसैनिक बलों के लिए सरलीकृत डाक मतदान व्यवस्था, और राजनीतिक दलों के नाम एवं चिह्न की समानता संबंधी प्रावधानों में संशोधन।

सबसे प्रमुख और व्यापक चर्चा का विषय रहा मतदाता पहचान को आधार संख्या से जोड़ना। इस प्रावधान का उद्देश्य मतदाता सूची की शुद्धता सुनिश्चित करना है। पिछले वर्षों में निर्वाचन आयोग ने कई राज्यों में पाए गए दोहराए गए नाम, मृत व्यक्तियों के नाम, तथा स्थानांतरित नागरिकों की अपूर्ण प्रविष्टियों का उल्लेख किया था। आयोग के अनुसार मतदाता सूची में लगभग ५ से ६ प्रतिशत त्रुटिपूर्ण प्रविष्टियाँ पाई जाती थीं। आधार से जोड़ने का प्रावधान इन त्रुटियों को कम करने और असली मतदाता की पहचान को सुनिश्चित करने का प्रयास करता है। यह सुधार मतदान में भूत मतदाताओं (फर्जी नामों) को रोकने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जाता है, हालाँकि यह भी स्पष्ट किया गया है कि आधार से जोड़ना पूरी तरह स्वैच्छिक है।

दूसरा महत्त्वपूर्ण सुधार है, मतदाता पंजीकरण के अवसरों का विस्तार। पहले वर्ष में केवल एक बार मतदाता पंजीकरण की औपचारिक तिथि निर्धारित होती थी, जिसके कारण 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने वाले लाखों युवाओं का नाम सूची में देर से शामिल होता था। अब यह प्रक्रिया वर्ष में चार बार कर दी गई है, जिससे युवा मताधिकार का अधिक तेज़ी से प्रयोग कर सकेंगे। यह सुधार न केवल युवाओं को सशक्त करता है बल्कि लोकतांत्रिक भागीदारी को भी बढ़ाता है।

तीसरा प्रावधान सेना, अर्धसैनिक बलों और विदेश में तैनात सरकारी सेवकों के लिए डाक मतपत्र प्रक्रिया को सरल और सुगम बनाता है। देश की सुरक्षा और प्रशासन में लगे इन नागरिकों के लिए मतदान का अधिकार अक्सर जटिल प्रक्रियाओं के कारण बाधित होता था। नई व्यवस्था उन्हें अपने कर्तव्यों के साथ-साथ लोकतांत्रिक भागीदारी का अवसर भी सुनिश्चित करती है।

चौथा प्रमुख संशोधन राजनीतिक दलों के नाम और चुनाव–प्रतीक की समानता से उत्पन्न भ्रम को दूर करने से संबंधित है। कई बार समान प्रतीक और मिलते-जुलते नाम मतदाताओं को भ्रमित कर देते थे। चुनाव आयोग को अब इस संबंध में अधिक स्पष्ट और सुव्यवस्थित अधिकार दिए गए हैं ताकि मतदाता भ्रमित न हों और चुनाव अधिक निष्पक्ष बन सके।

माननीय अध्यक्ष महोदय, यह भी सत्य है कि किसी भी सुधार के साथ चुनौतियाँ भी जुड़ी होती हैं। आधार–मतदाता जोड़ने की प्रक्रिया पर गोपनीयता, डेटा–सुरक्षा और सहमति संबंधी चिंताएँ व्यक्त की गई हैं। कई विशेषज्ञों ने यह भी कहा कि यदि आधार डेटाबेस में त्रुटियाँ हैं तो उसका असर मतदाता सूची पर भी पड़ सकता है। इसलिए यह आवश्यक है कि इन सुधारों के क्रियान्वयन में अत्यधिक पारदर्शिता, सुरक्षा और नागरिक अधिकारों का सम्मान सुनिश्चित किया जाए।

अंत में, मैं यह कहना चाहता हूँ कि चुनाव सुधार (संशोधन) अधिनियम 2021 भारतीय चुनाव प्रणाली को अधिक पारदर्शी, विश्वसनीय और समावेशी बनाने का प्रयास है। लोकतंत्र की नींव तभी मजबूत होती है जब उसकी चुनावी प्रक्रिया त्रुटिरहित, पारदर्शी और जनता के प्रति जवाबदेह हो। हमें इन सुधारों का स्वागत करते हुए यह भी सुनिश्चित करना होगा कि क्रियान्वयन के दौरान नागरिक अधिकार, गोपनीयता और संवैधानिक मूल्यों की पूर्ण रक्षा हो।

एनईपी

समावेशी एवं नवाचार–आधारित शिक्षा प्रणाली पर विशेष जोर देते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

वैदिक साहू | आईपीएम 04, आईपीएम24129

किसी भी देश की प्रगति उसकी शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता, पहुँच तथा दूरदर्शिता पर निर्भर करती है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 न केवल एक शिक्षा नीति है, बल्कि यह भविष्योन्मुखी, नवाचार–केंद्रित और समावेशी भारत की परिकल्पना का मार्गदर्शक दस्तावेज भी है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, एनईपी 2020 का मूल उद्देश्य शिक्षा को ज्ञान–आधारित से कौशल–आधारित, रटने से समझने, तथा डिग्री–केन्द्रित से क्षमता–केंद्रित बनाने का है। यह नीति भारत को वैश्विक ज्ञान–महाशक्ति बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

सबसे पहले मैं इसकी समावेशिता पर प्रकाश डालना चाहूँगा। शिक्षा का अधिकार तभी सार्थक है जब वह सभी तक समान रूप से पहुँचे, चाहे छात्र का लिंग, क्षेत्र, आर्थिक पृष्ठभूमि या सामाजिक स्थिति कुछ भी हो। एनईपी 2020 ने इसके लिए बहुभाषीय शिक्षा, स्थानीय भाषाओं में शिक्षण, डिजिटल शिक्षण व्यवस्था तथा सामाजिक–शैक्षिक रूप से वंचित समूहों के लिए विशेष योजनाओं को प्राथमिकता दी है। हमारे देश में लाखों विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं, जिनके लिए डिजिटल अंतराल एक प्रमुख चुनौती रहा है। इस नीति ने डिजिटल पुस्तकालय, ऑनलाइन शिक्षण मंच, मुक्त शैक्षिक सामग्री तथा राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी मंच की स्थापना के माध्यम से इस अंतर को कम करने का प्रयास किया है।

दूसरा महत्वपूर्ण पहलू है नवाचार–आधारित शिक्षा व्यवस्था। एनईपी 2020 शिक्षा को नई सदी के कौशलों से जोड़ता है, जैसे आलोचनात्मक चिंतन, समस्या–समाधान क्षमता, शोधभावना, उद्यमिता, रचनात्मकता और डिजिटल दक्षता। 5+3+3+4 संरचना के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रारंभ से ही अवधारणा–आधारित ज्ञान, प्रायोगिक गतिविधियाँ, कला–आधारित शिक्षण तथा परियोजना–आधारित अध्ययन पर ध्यान देने का अवसर मिलता है। यह व्यवस्था छात्रों को केवल परीक्षाएँ पास करने वाला विद्यार्थी नहीं बनाती, बल्कि जीवन के हर आयाम में सक्षम नागरिक बनाती है।

उच्च शिक्षा में बहु–अनुशासनिक विश्वविद्यालयों, शोध की स्वतंत्रता, एकल–नियामक ढाँचा तथा राष्ट्रीय शोध प्रतिष्ठान की स्थापना से युवा पीढ़ी को अनुसंधान और नवाचार के अधिक अवसर मिलेंगे। तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा में लाना भी एनईपी का प्रमुख लक्ष्य है, जिससे शिक्षा सीधे रोजगार, उद्यमिता और कौशल विकास से जुड़ सके।

माननीय अध्यक्ष महोदय, यह भी महत्वपूर्ण है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की भावना विकसित करना भी है। एनईपी 2020 भारतीय मूल्यों, संविधानिक दायित्वों, पर्यावरण चेतना, लैंगिक समानता और वैश्विक नागरिकता को भी उतना ही महत्व देती है।

समग्रतः, एनईपी 2020 एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था का निर्माण करती है जो समान अवसर देती है, नवाचार को बढ़ावा देती है, कौशल को प्राथमिकता देती है और विद्यार्थियों को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करती है। यह नीति "शिक्षित भारत – सक्षम भारत – समावेशी भारत" की विचारधारा को साकार करने की दिशा में मील का पत्थर है।

विकसित भारत

विकसित भारत @2047 के लिए युवा सशक्तिकरण, नीति नवाचार, कौशल विकास और राष्ट्र-निर्माण

मल्हार लांडगे | आईपीएम 04, आईपीएम24067

स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाना केवल एक सरकारी लक्ष्य नहीं, बल्कि यह सवा सौ करोड़ भारतीयों की सामूहिक आकांक्षा है। और इस महत्त्वाकांक्षी सपने को साकार करने की सबसे बड़ी शक्ति है, भारत का युवा वर्ग, जो विश्व की सबसे बड़ी युवा जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, किसी भी राष्ट्र के विकास की आधारशिला उसके युवाओं की क्षमता, कौशल, उद्यमिता और नवाचार पर टिकी होती है। आज भारत में 15 से 29 वर्ष आयु वर्ग की जनसंख्या कुल आबादी का लगभग 27 प्रतिशत है। यह संख्या केवल सांख्यिकी नहीं, यह भारत की जनसांख्यिकीय संपदा है। यदि हम युवा शक्ति को सही दिशा दें, अनुकूल अवसर उपलब्ध कराएँ और उन्हें नीति निर्माण में सहभागिता का मंच दें, तो 2047 तक विकसित भारत एक वास्तविकता बन सकता है।

इस संदर्भ में पहली आवश्यकता है, नीति नवाचार। वर्तमान समय में सरकार ने स्टार्टअप इंडिया, मेक इन इंडिया, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, डिजिटल इंडिया, राष्ट्रीय युवा नीति जैसे कई कार्यक्रम शुरू किए हैं, जिनका उद्देश्य युवाओं को नए प्रयोगों, तकनीकी कौशल, सामाजिक नवाचार और उद्यमिता से जोड़ना है। परन्तु हमें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि ये नीतियाँ ज़मीनी स्तर तक पहुँचें, युवाओं के लिए सरल हों, तथा ग्रामीण–शहरी अंतर को कम करें। नीति नवाचार का अर्थ केवल नई योजनाएँ बनाना नहीं, बल्कि प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सरल करना, पारदर्शिता बढ़ाना और युवाओं को निर्णय प्रक्रिया में भागीदार बनाना भी है।

दूसरा प्रमुख स्तंभ है, कौशल विकास। विकसित भारत के लिए केवल डिग्रियाँ पर्याप्त नहीं, बल्कि उद्योग–उन्मुख कौशल, तकनीकी दक्षता, डिजिटल क्षमता, उद्यमिता कौशल और वैश्विक प्रतिस्पर्धा की योग्यता अनिवार्य हैं। कौशल भारत मिशन के माध्यम से करोड़ों युवाओं को प्रशिक्षित किया जा रहा है, परंतु हमें कौशल प्रशिक्षण को अधिक प्रायोगिक, उद्योग आधारित और भविष्य की प्रौद्योगिकियों, जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता, हरित ऊर्जा, जैव प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स, साइबर सुरक्षा, से जोड़ने की आवश्यकता है। इसी के साथ, ग्रामीण युवाओं, महिलाओं और सामाजिक रूप से वंचित वर्गों के कौशल विकास पर विशेष ध्यान देना होगा, ताकि विकास समावेशी हो।

तीसरा और सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है, राष्ट्र-निर्माण में युवाओं की भूमिका। राष्ट्र-निर्माण केवल सरकार का काम नहीं; यह समाज, उद्योग, शिक्षा जगत और नागरिकों की सामूहिक जिम्मेदारी है। युवा समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं, चाहे वह पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य जागरूकता, स्वच्छता अभियान, नवाचार आधारित समाधान, या सामाजिक उद्यमिता के माध्यम से हो। युवाओं में ऊर्जा है, उत्साह है, आदर्शवाद है, और इन्हीं गुणों से देश के भविष्य की दिशा तय होती है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, विकसित भारत @2047 की परिकल्पना तभी पूर्ण होगी जब हम युवा पीढ़ी को शिक्षित, सक्षम, अवसर-संपन्न और मूल्य-सम्पन्न बनाएँ। हमें ऐसी व्यवस्था निर्माण करनी होगी जहाँ हर युवा को समान अवसर मिले, नवाचार को प्रोत्साहन मिले, कौशल को सम्मान मिले और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व की भावना विकसित हो।

अंत में, मैं यही कहना चाहूँगा, भारत का भविष्य युवा हैं, और युवाओं का भविष्य वही है जिसे हम आज नीतियों, कौशलों और मूल्यों से गढ़ते हैं। यदि हम युवा शक्ति को सशक्त करें, तो 2047 का विकसित भारत केवल एक सपना नहीं, बल्कि एक गौरवपूर्ण वास्तविकता होगा।

मीडिया की भूमिका

लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में मीडिया की भूमिका

गरिमा | एमबीए प्रथम वर्ष, एमबीए25090

मीडिया किसी भी लोकतंत्र की आत्मा होता है, वह जनता और सत्ता के बीच ऐसा सेतु है जो सूचना, जवाबदेही और पारदर्शिता सुनिश्चित करता है। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और यहाँ मीडिया का प्रभाव अत्यंत व्यापक है। 2023 के आँकड़ों के अनुसार भारत में 1.4 लाख से अधिक पंजीकृत समाचार पत्र, 400 से अधिक न्यूज़ चैनल, और 88 करोड़ इंटरनेट उपयोगकर्ता सक्रिय हैं, यह मीडिया की पहुँच और शक्ति का स्पष्ट संकेत है।

हम सभी जानते हैं कि किसी भी लोकतंत्र की सफलता केवल तीन संवैधानिक स्तंभों, विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका, पर ही निर्भर नहीं करती, बल्कि उससे भी अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जनसंचार माध्यम। यही कारण है कि माध्यमों को सदियों से लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता रहा है। इनका कार्य केवल सूचना पहुँचाना ही नहीं, बल्कि सत्ता को जवाबदेह बनाना, जनता की आवाज़ को सामने लाना और व्यवस्था की कमियों को उजागर करना भी है।

हमारे देश में माध्यमों की पहुँच विश्वभर में सबसे व्यापक मानी जाती है। भारतीय पंजीकरण कार्यालय की रिपोर्ट के अनुसार देश में एक लाख से अधिक पंजीकृत समाचार पत्र, सैकड़ों समाचार प्रसारण चैनल, तथा करोड़ों नागरिकों तक पहुँच रखने वाले डिजिटल मंच सक्रिय हैं। सांख्यिकीय रूप से देखा जाए तो देश के लगभग प्रत्येक परिवार तक किसी न किसी रूप में समाचार पहुँच रहा है। यह व्यापक पहुँच ही माध्यमों की प्रभावशीलता को दर्शाती है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि माध्यमों ने कई बार लोकतंत्र को मजबूत करने में निर्णायक भूमिका निभाई है। आपातकाल के समय कठोर नियंत्रणों के बावजूद पत्रकारों ने सत्य को सामने लाने का प्रयास किया। हाल के वर्षों में भी अनेक खोजी रिपोर्टों ने शासन की खामियों, भ्रष्टाचार और व्यवस्था में व्याप्त अनियमितताओं को उजागर किया। कई जनहित याचिकाएँ भी इसी प्रकार की रिपोर्टों के आधार पर न्यायालयों तक पहुँचीं, जिनसे महत्वपूर्ण सुधार संभव हुए।

हालाँकि, हमें यह भी स्वीकार करना चाहिए कि माध्यमों के सामने अनेक चुनौतियाँ भी मौजूद हैं, जैसे आधारहीन समाचारों का प्रसार, पक्षधरता, मानसिक ध्रुवीकरण तथा त्वरित लोकप्रियता की होड़। जब समाचार सत्य और निष्पक्षता से दूर होने लगते हैं, तो लोकतंत्र की जड़ें कमजोर पड़ने लगती हैं। इसलिए आवश्यक है कि माध्यम अपनी स्वतंत्रता का उपयोग करते हुए तथ्यपरकता, नैतिकता और जनहित को सर्वोपरि रखें।

अंततः मैं यही कहना चाहूँगी कि माध्यम न केवल लोकतंत्र के चौथे स्तंभ हैं, बल्कि उसकी रक्षा कवच भी हैं। एक सशक्त, नैतिक और जिम्मेदार माध्यम व्यवस्था ही जनता और शासन के बीच संतुलन बनाए रख सकती है तथा राष्ट्र को प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ा सकती है।

खुशियों की पुनर्परिभाषा: आईआईएम जम्मू में 'आनंदम' और मानवीय शिक्षा का प्रतिमान

प्रो. श्याम नारायण लाल | अध्यक्ष, आनंदम: द सेंटर फ़ॉर हैप्पीनेस

समकालीन भारत एक ऐसे दौर से गुजर रहा है जहाँ अभूतपूर्व आर्थिक वृद्धि, तकनीकी प्रगति और वैश्विक मंच पर बढ़ती उपस्थिति के साथ-साथ समाज के भीतर कई गहरे मानवीय प्रश्न भी उभर रहे हैं। आज का युवा पहले से कहीं अधिक अवसरों से घिरा हुआ है—बेहतर शिक्षा, वैश्विक संपर्क, डिजिटल साधन और करियर की अनेक संभावनाएँ उसके सामने खुली हुई हैं। लेकिन इन्हीं अवसरों के समानांतर उसके जीवन में अनिश्चितता, अपेक्षाओं का दबाव और मानसिक तनाव भी लगातार बढ़ रहा है। उच्च शिक्षा संस्थानों में पढ़ने वाला छात्र अब केवल पाठ्यक्रम, परीक्षा और नौकरी की चिंता तक सीमित नहीं है, बल्कि वह अपने भीतर चल रही बेचैनी, असमंजस और जीवन के अर्थ से जुड़े प्रश्नों से भी जूझ रहा है। यह स्थिति हमें शिक्षा के उद्देश्य पर नए सिरे से सोचने के लिए विवश करती है। क्या शिक्षा का लक्ष्य केवल कुशल पेशेवर तैयार करना होना चाहिए, या फिर उसका दायित्व इससे कहीं व्यापक है—व्यक्ति को संतुलित, संवेदनशील और समाज के प्रति जिम्मेदार नागरिक बनाना भी?

इसी पृष्ठभूमि में भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू द्वारा शुरू की गई 'आनंदम: द सेंटर फॉर हैप्पीनेस' पहल को समझा जाना चाहिए। आनंदम किसी तात्कालिक प्रवृत्ति या औपचारिक कार्यक्रम के रूप में नहीं, बल्कि एक दीर्घकालिक शैक्षणिक और दार्शनिक दृष्टि के रूप में सामने आया है। यह उस गहरे संस्थागत आत्ममंथन का परिणाम है, जिसमें यह स्वीकार किया गया कि यदि भारत को वास्तव में विकसित राष्ट्र बनना है—जिसे आज हम 'विकसित भारत @2047' के लक्ष्य के रूप में देखते हैं—तो केवल आर्थिक आँकड़ों, बुनियादी ढाँचे और तकनीकी दक्षता पर ध्यान देना पर्याप्त नहीं होगा। विकसित भारत का अर्थ केवल ऊँची जीडीपी या वैश्विक रैंकिंग नहीं है, बल्कि ऐसा समाज है जहाँ नागरिक मानसिक रूप से स्वस्थ हों, भावनात्मक रूप से संतुलित हों, नैतिक रूप से सजग हों और अपनी सांस्कृतिक पहचान को लेकर आत्मविश्वास से भरे हों। आनंदम इसी मानवीय पक्ष को केंद्र में रखकर काम करता है और इस अर्थ में यह राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया से सीधे जुड़ता है।

आज जब विकसित भारत की चर्चा होती है, तो विमर्श प्रायः आर्थिक विकास, नवाचार, स्टार्ट-अप संस्कृति, डिजिटलीकरण और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के इर्द-गिर्द घूमता है। ये सभी पहलू निस्संदेह अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, लेकिन इनके साथ एक मौन प्रश्न भी जुड़ा रहता है—क्या यह विकास मनुष्य को भीतर से भी उतना ही मजबूत बना रहा है? यदि नेतृत्व करने वाले लोग भीतर से असंतुलित, तनावग्रस्त और केवल परिणाम-केंद्रित होंगे, तो यह विकास दीर्घकाल में न तो संस्थानों को मजबूत कर पाएगा और न ही समाज को। आनंदम इसी असंतुलन को समझने और उसे दूर करने का प्रयास है। यह इस विश्वास पर आधारित है कि राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया अंततः व्यक्ति-निर्माण से होकर गुजरती है। जब व्यक्ति संतुलित होगा, तभी संस्थान मजबूत होंगे और तभी राष्ट्र की नींव टिकाऊ बनेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसी सोच को स्पष्ट और सशक्त रूप में सामने लाती है। एनईपी 2020 बार-बार इस बात पर ज़ोर देती है कि शिक्षा केवल संज्ञानात्मक या बौद्धिक विकास तक सीमित न रहे, बल्कि विद्यार्थी का समग्र विकास हो—जिसमें बौद्धिक, भावनात्मक, नैतिक, शारीरिक और रचनात्मक सभी पक्ष शामिल हों। यह नीति भारतीय ज्ञान परंपरा, कला, संस्कृति और जीवन मूल्यों को शिक्षा के केंद्र में लाने की बात करती है और शिक्षा को जीवन से जोड़ने पर बल देती है। आनंदम इस नीति की भावना को केवल सैद्धांतिक रूप में स्वीकार नहीं करता, बल्कि उसे व्यवहार में उतारने का प्रयास करता है। यह दिखाता है कि एक उच्च स्तरीय प्रबंधन संस्थान किस प्रकार एनईपी 2020 के आदर्शों को अपने शैक्षणिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बना सकता है।

आनंदम की स्थापना इस गहरी समझ के साथ की गई कि खुशी कोई सतही या हल्की-फुल्की भावना नहीं है, जिसे केवल प्रेरक भाषणों या अस्थायी गतिविधियों से हासिल किया जा सके। भारतीय परंपरा

में आनंद को जीवन के संतुलन से जोड़ा गया है—जहाँ कर्म, धर्म, ज्ञान और आत्मबोध एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। इस दृष्टि में खुशी उपभोग या बाहरी सफलता से नहीं, बल्कि आंतरिक स्थिरता, उद्देश्य की स्पष्टता और समाज के साथ स्वस्थ संबंधों से उत्पन्न होती है। आनंदम ने इसी भारतीय दृष्टिकोण को आधुनिक संदर्भ में पुनर्परिभाषित करने का प्रयास किया है। यहाँ खुशी को केवल व्यक्तिगत सुख तक सीमित नहीं रखा गया, बल्कि उसे सामाजिक ज़िम्मेदारी, नैतिक चेतना और सार्वजनिक जीवन से जोड़ा गया है। यह दृष्टि सीधे उस नागरिक की कल्पना से मेल खाती है, जिसकी आवश्यकता विकसित भारत को होगी—जो केवल कुशल पेशेवर न हो, बल्कि संवेदनशील और जिम्मेदार इंसान भी हो।

आनंदम को आईआईएम जम्मू के शैक्षणिक और संस्थागत जीवन में इस तरह जोड़ा गया है कि यह किसी अलग-थलग चलने वाली पहल न बनकर संस्थान की रोज़मर्रा की संस्कृति का हिस्सा बन जाए। छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों के लिए पेशेवर काउंसलिंग सेवाओं की उपलब्धता ने मानसिक स्वास्थ्य को लेकर बातचीत को सामान्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। धीरे-धीरे यह समझ विकसित हो रही है कि मानसिक भलाई कमजोरी का संकेत नहीं, बल्कि आत्म-देखभाल और आत्म-विकास का आवश्यक हिस्सा है। परीक्षा और मूल्यांकन जैसे तनावपूर्ण समय में योग और ध्यान सत्रों का आयोजन छात्रों को मानसिक स्थिरता, एकाग्रता और आत्म-संयम विकसित करने में मदद करता है। यह अभ्यास केवल तनाव कम करने का साधन नहीं, बल्कि आत्म-नियंत्रण और अनुशासन का प्रशिक्षण भी है, जो भविष्य के नेतृत्व के लिए अत्यंत आवश्यक है।

आनंदम के अंतर्गत शिक्षकों के लिए भी संवाद, चिंतन और आत्म-मूल्यांकन के अवसर प्रदान किए गए हैं। यह इस बात की स्वीकारोक्ति है कि यदि शिक्षक स्वयं मानसिक और भावनात्मक रूप से संतुलित नहीं होंगे, तो वे छात्रों का मार्गदर्शन प्रभावी ढंग से नहीं कर पाएँगे। इस प्रकार आनंदम संस्थान में एक ऐसी संस्कृति को बढ़ावा देता है, जहाँ पद, भूमिका और पदानुक्रम के बावजूद मनुष्य को केंद्र में रखा जाता है। यह संस्कृति स्वयं में विकसित भारत की परिकल्पना का एक छोटा लेकिन महत्वपूर्ण प्रतिबिंब है।

आनंदम की सबसे केंद्रीय और परिभाषित करने वाली विशेषता यही है कि वह खुशी और मानसिक भलाई को समझने के लिए प्रचलित पश्चिमी मॉडलों की सहज नकल या यांत्रिक आयात पर निर्भर नहीं करता—एक प्रवृत्ति जो आज उच्च शिक्षा संस्थानों में सामान्य हो गई है। इसके बजाय, आनंदम के अंतर्गत विकसित और संचालित किए जा रहे हैप्पीनेस पाठ्यक्रम अपनी वैचारिक जड़ों को भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं और भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System) में गहराई से स्थापित करते हैं। यहाँ उपनिषदों की आनंद की दार्शनिक अवधारणा, भगवद्गीता का कर्म, असक्ति और समत्व का दृष्टिकोण, बौद्ध परंपरा का मध्य मार्ग और सजगता का अभ्यास, तथा योगिक चिंतन का आत्म-संयम और चित्त-स्थिरता—इन सभी को न तो प्रतीकात्मक रूप से लिया जाता है और न ही किसी धार्मिक उपदेश की तरह प्रस्तुत किया जाता है। इन्हें समकालीन जीवन की वास्तविक चुनौतियों—तनाव, निर्णय-निर्माण, कार्य-जीवन संतुलन, नेतृत्व की नैतिक दुविधाएँ और उद्देश्य की खोज—से जोड़कर व्यावहारिक रूप में समझाया जाता है।

आनंदम में खुशी को किसी क्षणिक भावनात्मक उत्तेजना, व्यक्तिगत उपलब्धि या बाहरी सफलता का पर्याय नहीं माना जाता, बल्कि इसे जीवन, कार्य और समाज के साथ एक स्थायी, नैतिक और संतुलित संबंध के रूप में देखा जाता है। आधुनिक मनोविज्ञान, व्यवहार विज्ञान और संगठनात्मक अध्ययन से संवाद अवश्य किया जाता है, लेकिन वह संवाद आलोचनात्मक, चयनात्मक और संदर्भ-संवेदनशील होता है, न कि अधीनस्थ या अनुकरणात्मक। इसी बौद्धिक आत्मनिर्भरता के कारण आनंदम अन्य

वेलनेस या हैप्पीनेस पहलों से स्पष्ट रूप से अलग दिखाई देता है। यह पहल इस बात को सशक्त रूप से स्थापित करती है कि भारत की अपनी बौद्धिक और सांस्कृतिक परंपरा न केवल ऐतिहासिक महत्व रखती है, बल्कि आज के युवाओं को मानसिक स्थिरता, नैतिक स्पष्टता और जीवन-दिशा प्रदान करने में भी पूरी तरह सक्षम है—और यही दृष्टि आनंदम को एक विशिष्ट, आत्मविश्वासी और दीर्घकालिक शैक्षणिक प्रयोग बनाती है।

इन सभी प्रयासों के बीच आनंदम को एक नई गहराई और पहचान तब मिली, जब कला—विशेष रूप से पेंटिंग—को शिक्षा और मानसिक भलाई के एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में अपनाया गया। आमतौर पर प्रबंधन संस्थानों में कला को सह-पाठ्य या अतिरिक्त गतिविधि के रूप में देखा जाता है, लेकिन आईआईएम जम्मू ने इस धारणा को बदलने का प्रयास किया। यहाँ पेंटिंग को एक ऐसे अभ्यास के रूप में समझा गया, जो व्यक्ति को स्वयं से जोड़ता है और उसे अपने भीतर की गति को समझने का अवसर देता है। जब कोई छात्र कैनवास पर काम करता है, तो वह केवल रंग और रेखाओं से नहीं जूझता, बल्कि अपने भीतर की अधीरता, अपेक्षाओं, असुरक्षाओं और भय से भी सामना करता है।

पेंटिंग का अनुभव अपने आप में गहरा दार्शनिक अर्थ रखता है। यह हमें सिखाता है कि हर चीज़ तुरंत नहीं होती, हर प्रयास का परिणाम पहले से तय नहीं होता और हर प्रक्रिया को समय देना पड़ता है। रंग कई बार उम्मीद के मुताबिक नहीं बैठते, रेखाएँ बिगड़ जाती हैं और चित्र वैसा नहीं बन पाता जैसा मन में सोचा गया था। लेकिन यही क्षण सीख के क्षण होते हैं। यह अनुभव छात्रों को असफलता को स्वीकार करना, धैर्य रखना और प्रक्रिया पर भरोसा करना सिखाता है। प्रबंधन शिक्षा के संदर्भ में यह सीख अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वास्तविक जीवन में निर्णय अक्सर अधूरी जानकारी, अनिश्चित परिस्थितियों और समय के दबाव में लेने पड़ते हैं। पेंटिंग छात्रों को यह समझने में मदद करती है कि अनिश्चितता कोई कमजोरी नहीं, बल्कि रचनात्मकता और नवाचार का स्रोत भी हो सकती है।

आईआईएम जम्मू में आयोजित समकालीन पेंटिंग कार्यशालाओं ने छात्रों को अभिव्यक्ति के विविध रूपों और दृष्टियों से परिचित कराया। इन कार्यशालाओं में कोई एक सही तरीका नहीं था। हर प्रतिभागी की अपनी यात्रा थी, अपनी गति थी और अपनी समझ थी। इस अनुभव ने छात्रों को यह सिखाया कि विविधता केवल स्वीकार करने की चीज़ नहीं है, बल्कि वही किसी भी संगठन और समाज की वास्तविक ताकत होती है। यह विचार समावेशी नेतृत्व, संवाद और सहयोग की उस संस्कृति से मेल खाता है, जिसकी आवश्यकता विकसित भारत को होगी। इन कार्यशालाओं में छात्रों की भागीदारी स्वैच्छिक थी, फिर भी उनकी संख्या और उत्साह लगातार बढ़ता गया, जो यह दर्शाता है कि वे इन अनुभवों को अपने व्यक्तित्व विकास के लिए महत्वपूर्ण मान रहे हैं।

बासोली पेंटिंग पर आधारित सप्ताह भर की कार्यशाला ने इस अनुभव को सांस्कृतिक और दार्शनिक दोनों स्तरों पर और गहरा कर दिया। बासोली चित्रकला केवल एक पारंपरिक कला शैली नहीं है, बल्कि अनुशासन, प्रतीकात्मकता और सांस्कृतिक स्मृति का जीवंत रूप है। इस कार्यशाला के दौरान छात्रों ने यह अनुभव किया कि परंपरा कोई जड़ या अतीत की वस्तु नहीं है, बल्कि एक जीवित प्रक्रिया है, जो आज के जीवन और नेतृत्व के प्रश्नों से भी संवाद कर सकती है। रंगों का संयम, रेखाओं की सटीकता और अभ्यास की निरंतरता छात्रों को यह सिखाती है कि उत्कृष्टता शॉर्टकट से नहीं, बल्कि सतत साधना से आती है। यह सीख विकसित भारत की दीर्घकालिक सोच से भी गहराई से जुड़ी हुई है, जहाँ धैर्य, अनुशासन और निरंतरता की आवश्यकता होगी।

इस कार्यशाला ने छात्रों को अपने क्षेत्रीय और राष्ट्रीय संदर्भों पर भी नए सिरे से सोचने का अवसर दिया। जम्मू जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध क्षेत्र में स्थित एक राष्ट्रीय प्रबंधन संस्थान के लिए यह अनुभव विशेष महत्व रखता है। छात्रों ने महसूस किया कि वैश्विक बनने का अर्थ अपनी जड़ों से कटना नहीं है, बल्कि अपनी सांस्कृतिक पहचान को समझते हुए और सम्मान देते हुए दुनिया से संवाद करना है। यह दृष्टि आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत की भावना से सीधे जुड़ती है, जहाँ आत्मविश्वास और वैश्विक सहभागिता साथ-साथ चलती हैं।

इन पेंटिंग कार्यशालाओं में छात्रों की बढ़ती और निरंतर भागीदारी एक अत्यंत महत्वपूर्ण संकेत है। ये कार्यशालाएँ अनिवार्य नहीं थीं, फिर भी छात्रों ने उनमें स्वेच्छा से समय और ऊर्जा लगाई। कई छात्रों ने यह साझा किया कि इन अनुभवों ने उन्हें आत्मचिंतन का अवसर दिया, मानसिक विश्राम प्रदान किया और पढ़ाई के दबाव के बीच संतुलन बनाए रखने में मदद की। कुछ छात्रों के लिए यह पहली बार था जब उन्होंने बिना किसी मूल्यांकन या प्रतिस्पर्धा के कुछ किया और उसी में उन्हें गहरी संतुष्टि मिली। यह बदलाव यह दर्शाता है कि आज का युवा केवल तकनीकी दक्षता ही नहीं, बल्कि अर्थ, संतुलन और रचनात्मकता की भी तलाश में है।

जनवरी 2026 में प्रस्तावित अंतरराष्ट्रीय पेंटिंग कार्यशाला इसी यात्रा का स्वाभाविक विस्तार है। इस कार्यशाला में भारत और विदेशों के प्रतिष्ठित कलाकारों के साथ-साथ देश के विभिन्न हिस्सों से आए युवा कलाकार भाग लेंगे। यह साझा मंच सांस्कृतिक संवाद, सहयोग और आपसी सीख का अवसर प्रदान करेगा। छात्रों के लिए यह अनुभव न केवल वैश्विक दृष्टि विकसित करेगा, बल्कि उन्हें यह भी सिखाएगा कि वैश्विक संवाद तभी सार्थक होता है, जब वह अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ा हो। यह दृष्टिकोण विकसित भारत की उस सोच से मेल खाता है, जिसमें भारत आत्मविश्वास के साथ विश्व से जुड़ता है, लेकिन अपनी पहचान को बनाए रखता है।

आनंदम की पहल केवल अनुभवात्मक गतिविधियों तक सीमित नहीं है। इसके अंतर्गत शोध और अकादमिक गंभीरता पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। संदर्भ-आधारित हैप्पीनेस इंडेक्स विकसित करने का प्रयास इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह इंडेक्स भावनात्मक मजबूती, सामाजिक जुड़ाव, उद्देश्य की भावना, नैतिक दृष्टि और सांस्कृतिक जड़ों जैसे पहलुओं को ध्यान में रखता है। इसका उद्देश्य यह दिखाना है कि खुशी कोई अमूर्त या हल्का विषय नहीं, बल्कि अध्ययन, शोध और मापन का गंभीर क्षेत्र भी हो सकता है। यह पहल एनईपी 2020 के उस लक्ष्य से मेल खाती है, जिसमें बहु-विषयक, अनुसंधान-आधारित और संदर्भ-संवेदनशील शिक्षा पर ज़ोर दिया गया है।

समग्र रूप से देखा जाए तो आनंदम आईआईएम जम्मू की शैक्षणिक पहचान को एक नई और व्यापक दिशा देता है। यह संस्थान को केवल एक प्रबंधन स्कूल से आगे ले जाकर एक ऐसे विचार-केंद्र के रूप में स्थापित करता है, जहाँ नेतृत्व, नैतिकता, मानसिक भलाई, कला, संस्कृति और भारतीय ज्ञान परंपरा एक साथ विकसित होती हैं। यह पहल स्पष्ट रूप से यह संदेश देती है कि विकसित भारत का रास्ता केवल तेज़ आर्थिक विकास से नहीं, बल्कि संतुलित, संवेदनशील और सजग नागरिकों के निर्माण से होकर जाता है। इसी अर्थ में आनंदम न केवल आईआईएम जम्मू की एक पहल है, बल्कि भविष्य की भारतीय उच्च शिक्षा के लिए एक मार्गदर्शक प्रयोग भी है—जो यह दिखाता है कि जब शिक्षा मनुष्य को केंद्र में रखती है, तभी वह राष्ट्र के भविष्य को सचमुच मजबूत और मानवीय बना सकती है।

महिला सशक्तिकरण: समाज, अर्थव्यवस्था और नेतृत्व में बदलाव की चाबी

डॉ. अनुजा अखौरी | उपाध्यक्ष, हिंदी कार्यव्यान समिति

महिला सशक्तिकरण (Women Empowerment) का अर्थ है महिलाओं को **शिक्षा, अधिकार, समान अवसर, आत्मनिर्भरता और सम्मान** देना ताकि वे अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में स्वतंत्र रूप से निर्णय ले सकें और अपने लक्ष्य को हासिल कर सकें। यह केवल महिला का व्यक्तिगत विकास नहीं है, बल्कि **समाज और राष्ट्र के समग्र विकास का आधार** भी है।

महिला सशक्तिकरण क्यों आवश्यक है?

भारत जैसे विविध और लोकतांत्रिक देश में महिलाओं की **भागीदारी सकारात्मक परिवर्तन का मूल आधार** है। सशक्त महिलाएँ:

- अपने परिवार और समाज में सकारात्मक भूमिका निभाती हैं।
- आर्थिक वृद्धि को तेज करती हैं।
- सामाजिक असमानताओं को कम करती हैं।
- निर्णय लेने की प्रक्रिया में संतुलन लाती हैं।

महिला सशक्तिकरण का लक्ष्य है **लिंग भेदभाव, सामाजिक पैमानों, आर्थिक असमानताओं और शिक्षा से जुड़ी चुनौतियों** को खत्म करना।

महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र

1. शिक्षा

शिक्षा महिला को ज्ञान प्रदान करती है जिससे वह **अपने हक, अधिकार और कर्तव्यों** को समझ सके।

2. आर्थिक स्वतंत्रता

रोज़गार, स्वरोज़गार, उद्यमिता के अवसर महिलाओं को **आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर** बनाते हैं।

3. नेतृत्व और राजनीति

महिलाओं की भागीदारी **नेतृत्व, प्रशासन और नीति निर्माण** में समाज को अधिक समावेशी बनाती है।

4. सामाजिक सम्मान और सुरक्षा

महिला को सम्मान, सुरक्षा और गैर-भेदभावपूर्ण वातावरण मिलना सशक्तिकरण का मूल घटक है।

निष्कर्ष

महिला सशक्तिकरण केवल एक सामाजिक मुद्दा नहीं है — यह **राष्ट्र की प्रगति, शांतिपूर्ण समाज और समृद्धि** की ओर बढ़ने का मार्ग है। शिक्षा, रोजगार, अधिकार और नेतृत्व के क्षेत्रों में समान अवसर प्रदान करके हम एक **समावेशी और प्रगतिशील भारत** की कल्पना को साकार कर सकते हैं।

धर्मेन्द्र: भारतीय सिनेमा के ही-मैन – शक्ति, संवेदना और सादगी की मिसाल

शालिन एस. नायर | प्रशासनिक अधिकारी जनसंपर्क एवं प्रशासन

कुछ लोग अभिनय के लिए पैदा होते हैं,
कुछ लोग ज़िंदगी को सहने के लिए।
और कुछ विरले ऐसे भी होते हैं,
जो यादें नहीं, यादगार बन जाते हैं।
इसलिए नहीं कि उन्होंने रौशनी की तलाश की,
बल्कि इसलिए कि उन्होंने उस नूर को
ख़ामोशी से अपने वजूद में सँजोए रखा।

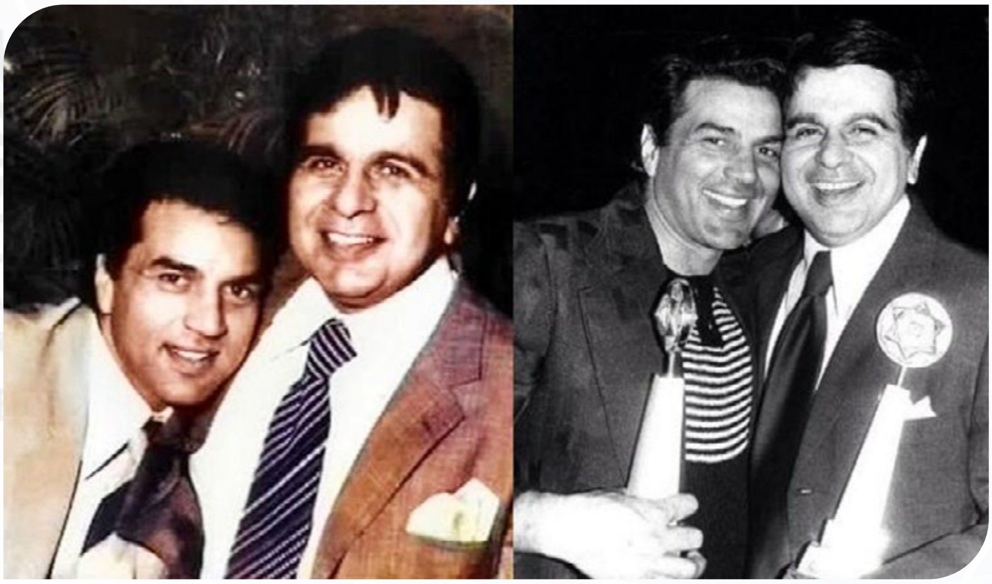

भारतीय सिनेमा ने अनेक सितारे देखे हैं, परंतु बहुत कम कलाकार ऐसे हुए हैं जो समय के साथ एक संस्था बन गए हों। श्री धर्मेन्द्र उसी दुर्लभ आकाशगंगा के नक्षत्र हैं, एक ऐसा अभिनेता, जिसकी शारीरिक सशक्तता ने एक युग को परिभाषित किया, जिसकी भावनात्मक गहराई ने पीढ़ियों को चकित किया, और जिसकी आत्मा अपार प्रसिद्धि के बावजूद सादगी में रची-बसी रही।

मुझे फिल्म ओम शांति ओम के प्रतिष्ठित गीत-सीक्वेंस की शूटिंग के दौरान श्री धर्मेन्द्र से मिलने का दुर्लभ सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने आत्मीयता से मेरा अभिवादन किया, मुझे आशीर्वाद दिया और गले लगाया, वह आलिंगन मेरे जीवन की अमूल्य स्मृति बन गया। शूटिंग के दौरान हमारे बीच एक अपनापन सा बन गया और वे मुझे स्नेहपूर्वक पुत्तर कहकर संबोधित करने लगे, एक साधारण-सा शब्द, जिसमें अपार ऊष्मा थी और जिसने हर दूरी को क्षण भर में मिटा दिया।

सिनेमा के इतिहास को पुनर्जीवित करने की उस उल्लासपूर्ण हलचल के बीच वे शांत, संयत, सहज और पूरी तरह उपस्थित खड़े थे। उस क्षण न कोई अभिनय था, न श्रेष्ठता का कोई आवरण केवल एक अद्भुत सौम्यता, मानो सिनेमा स्वयं ठहरकर उनके माध्यम से मुस्कुरा रहा हो। वे सभी से स्नेहपूर्वक मिलते, धैर्य से संवाद करते और ऐसे सहज भाव से स्वयं को धारण किए हुए थे, मानो सब कुछ पा लेने के बाद भी अहंकार उन्हें छू तक न सका हो। वह क्षणिक, किंतु गहन अनुभव उस किंवदंती के पीछे छिपे मनुष्य से साक्षात्कार था, वह धर्मेन्द्र, जिसे दुनिया बहुत कम देख पाती है।

धर्मेन्द्र के लिए सिनेमा कभी मात्र एक पेशा नहीं रहा; वह एक साधना थी। बॉलीवुड के ही-मैन बनने से बहुत पहले वे फिल्मों के सच्चे प्रेमी थे। वे बार-बार फिल्में देखते, अभिनय को आत्मसात करते, मौन को समझते और भावनाओं को महसूस करते थे। सिनेमा की उनकी समझ किसी शिक्षण संस्थान से नहीं, बल्कि गहन अवलोकन और आत्मीय श्रद्धा से जन्मी थी।

उन्हें विशिष्ट बनाता था फ्रेम पर हावी न होने का उनका स्वभाव। वे दृश्य को साँस लेने देते थे। चाहे वह प्रेम भरी दृष्टि हो, संयमित पीड़ा का क्षण हो या सहज हास्य, धर्मेन्द्र सिनेमा की लय पर भरोसा करते थे। उनकी मर्दानगी कभी मुखर नहीं रही; वह स्वाभाविक थी—अतिशयोक्ति नहीं, बल्कि प्रामाणिकता से जन्मी हुई।

धर्मेन्द्र की विशाल परदे की उपस्थिति के पीछे एक समर्पित शिष्य का हृदय था, और उस समर्पण के केंद्र में थे दिलीप कुमार, वे महान कलाकार, जिन्हें वे सर्वाधिक पूजते थे। धर्मेन्द्र अक्सर बताया करते थे कि वे दिलीप कुमार की फिल्मों को विस्मय के साथ देखते उनके ठहराव, उनकी अंतर्निहित भावनाओं और बिना आवाज़ उठाए भावनात्मक तूफान रच देने की क्षमता का अध्ययन करते।

उन्होंने दिलीप कुमार की केवल प्रशंसा नहीं की; उन्होंने उनसे मौन में सीख ली। अनुपमा और बंदिनी जैसी फिल्मों में दिखने वाला भावनात्मक संयम उसी प्रभाव की प्रतिध्वनि है, इसका प्रमाण कि शक्ति और संवेदनशीलता विरोधी नहीं, बल्कि सहयात्री हैं। आत्मचिंतन के क्षणों में धर्मेन्द्र ने शायरी के माध्यम से भी अपनी श्रद्धा व्यक्त की किसी समकालीन की तरह नहीं, बल्कि गुरु को नमन करते शिष्य की भाँति।

हालाँकि उद्योग ने उन्हें ही-मैन की उपाधि दी, धर्मेन्द्र ने स्वयं को कभी एक ही छवि में सीमित नहीं होने दिया। उन्होंने चट्टानें उठाईं, खलनायकों से लड़े, पर साथ ही चुपके चुपके में हँसाया, अनुपमा में रुलाया और सहज गरिमा के साथ प्रेम को पर्दे पर उतारा।

उनकी महानता इसी संतुलन में निहित थी शारीरिक बल, जिसे भावनात्मक बुद्धिमत्ता ने कोमल बनाया। उन्होंने सिद्ध किया कि भारतीय सिनेमा में मर्दानगी करुणामय, संवेदनशील और काव्यात्मक भी हो सकती है।

रोशनी और तालियों से परे, धर्मेन्द्र पहले एक सिनेमा प्रेमी थे और बाद में एक सितारा। कहानी कहने के प्रति उनका प्रेम विजेता फ़िल्म्स के माध्यम से फिल्म निर्माण में भी प्रकट हुआ एक ऐसा बैनर जिसने अर्थपूर्ण सिनेमा को स्थान दिया और व्यावसायिक फार्मूलों से परे सच्ची कहानियों को पोषित किया। उनके लिए फिल्में आत्मा से भरपूर होनी चाहिए थीं, केवल दृश्य वैभव से नहीं।

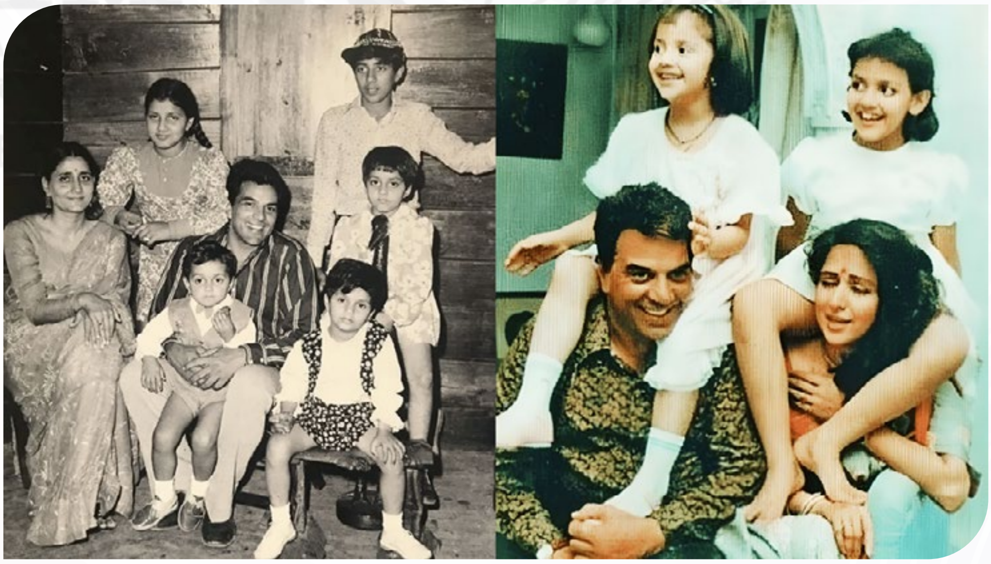

उनकी उद्यमशीलता सनी सुपर साउंड जैसे संगीत और ध्वनि उपक्रमों में भी झलकी, साथ ही उनके रेस्तराँ उपक्रमों में, जो उनके आतिथ्य, सादगी और अपनत्व के प्रेम को दर्शाते थे। ये प्रयास कभी आडंबरपूर्ण नहीं रहे; वे उनके व्यक्तित्व के सहज विस्तार थे।

धर्मेन्द्र का निजी जीवन, जिस पर अक्सर चर्चा होती है पर जिसे कम समझा गया, शांत गरिमा और उत्तरदायित्व का प्रतीक है। उन्होंने दो परिवारों को संतुलन और सम्मान के साथ निभाया, कभी अपने कर्तव्यों या संबंधों से मुँह नहीं मोड़ा। वे अपनी प्रथम पत्नी प्रकाश कौर तथा उनके बच्चों सनी देओल, अजीता देओल, विजेता देओल और बॉबी देओल के साथ खड़े रहे, जो सभी अपने-अपने ढंग से देओल विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं।

उनके साथ उनकी दूसरी पत्नी, भारतीय सिनेमा की मूल 'ड्रीम गर्ल' हेमा मालिनी हैं, जिनसे उन्हें ईशा देओल और अहाना देओल नामक दो पुत्रियाँ हैं। सार्वजनिक जीवन की जटिलताओं के बावजूद धर्मेन्द्र ने सदैव परिवार को प्रसिद्धि से ऊपर रखा व्याख्या की बजाय उत्तरदायित्व को चुना।

देओल विरासत का एक महत्वपूर्ण, किंतु अक्सर अनदेखा पक्ष हैं अभय देओल धर्मेन्द्र के भतीजे और अजीत देओल के पुत्र। अजीत देओल ने सादगी और मूल्यों से जुड़ा जीवन चुना, कैमरों से दूर। अभय देओल ने अपनी अलग पहचान बनाई अपरंपरागत, विषय वस्तु प्रधान सिनेमा के माध्यम सेजो देओल परिवार की बौद्धिक और शांत धारा को प्रतिबिंबित करता है।

धर्मेन्द्र की यात्रा स्थायी मित्रताओं से भी गढ़ी गई संघर्ष में बनी और सफलता में मजबूत हुईं। मनोज कुमार के साथ उनका विशेष संबंध रहा, जिनके साथ उन्होंने शुरुआती दिनों में संघर्ष साझा किया। आपसी सम्मान और कठिनाइयों की साझेदारी ने इस संबंध को गहरा बनाया।

वर्षों के दौरान उन्होंने हिंदी सिनेमा के महानतम नामों राजेश खन्ना, शत्रुघ्न सिन्हा, विनोद खन्ना, जीतेंद्र, अमिताभ बच्चन, सुनील दत्त, ओम प्रकाश, फिरोज़ खान और संजय खान के साथ आत्मीय संबंध बनाए रखे। ये केवल पेशेवर संबंध नहीं थे, बल्कि निष्ठा और सौहार्द से परिपूर्ण मित्रताएँ थीं। इसी प्रकार, हिंदी सिनेमा के शोमैन श्री राज कपूर के साथ भी श्री धर्मेंद्र का गहरा स्नेहपूर्ण और आत्मीय संबंध रहा। अपने आरंभिक दिनों में, जब श्री अनिल शर्मा सहायक निर्देशक के रूप में कार्य कर रहे थे, तब श्री राज कपूर ने उन्हें विशेष रूप से यह सलाह दी थी कि जब भी श्री धर्मेंद्र सेट पर आएँ, तो अपना मेकअप रूम उन्हें अवश्य दें। यह छोटा सा किंतु अत्यंत महत्वपूर्ण प्रसंग स्वयं में इस बात का सशक्त प्रमाण है कि श्री राज कपूर के मन में श्री धर्मेंद्र के प्रति कितना गहरा सम्मान, स्नेह और आदर भाव था। यही नहीं, यह घटना धर्मेंद्र और कपूर परिवार के बीच साझा किए गए गहरे पारिवारिक और भावनात्मक रिश्ते को भी स्पष्ट रूप से दर्शाती है। यह आत्मीयता श्री शशि कपूर और श्री शम्मी कपूर के साथ भी समान रूप से बनी रही, जहाँ आपसी अपनत्व, पारस्परिक सम्मान और सिनेमा के प्रति साझा समर्पण की भावना सदैव झलकती रही। ये सभी संबंध उस स्वर्णिम दौर की पहचान हैं, जब हिंदी सिनेमा केवल उत्कृष्ट फिल्मों का माध्यम नहीं था, बल्कि मानवीय मूल्यों, सच्ची मित्रता और परस्पर आदर की जीवंत मिसाल भी हुआ करता था। हिंदी सिनेमा के महानायक श्री धर्मेंद्र का फिल्मकार श्री अनिल शर्मा एवं निर्माता श्री गुड्डू धनोआ के साथ अत्यंत आत्मीय और सुदृढ़ संबंध रहा है। यह निकटता केवल पेशेवर सहयोग तक सीमित नहीं रही, बल्कि आपसी विश्वास, सम्मान और वर्षों पुरानी मित्रता पर आधारित रही है, जो हिंदी सिनेमा की पीढ़ियों को जोड़ती है। उनका अनिल शर्मा के साथ भी गहरा रचनात्मक संबंध रहा, जिनका सिनेमा परिवार, राष्ट्रभाव और सम्मान जैसे मूल्यों से मेल खाता था, तथा गुड्डू धनोआ के साथ भी जो पीढ़ियों के पार विश्वास और सहयोग का प्रतीक रहा।

महान स्वर कोकिला श्रीमती लता मंगेशकर के साथ श्री धर्मेन्द्र का संबंध अत्यंत आत्मीय, सम्मानपूर्ण और भावनात्मक रूप से गहरा रहा। दोनों ही अपने-अपने क्षेत्र में उत्कृष्टता, सादगी और संवेदनशीलता

के प्रतीक थे, और यही साझा मूल्य उनके संबंधों की आधारशिला बने। लता जी की मधुर आवाज़ ने धर्मेन्द्र के अनेक अमर फिल्मी क्षणों को भावनात्मक गहराई प्रदान की, वहीं धर्मेन्द्र उनके प्रति सदैव गहरा आदर और अपनत्व व्यक्त करते रहे। यह रिश्ता केवल सिनेमा तक सीमित नहीं था, बल्कि एक ऐसी आत्मीय समझ का प्रतीक था, जहाँ शब्दों से अधिक भाव बोलते थे, और जहाँ संगीत तथा अभिनय, दोनों ही एक-दूसरे के सम्मान में मौन होकर झुक जाते थे। महान फिल्मकार श्री ऋषिकेश मुखर्जी के साथ श्री धर्मेन्द्र का रिश्ता अत्यंत आत्मीय, विश्वासपूर्ण और रचनात्मक रूप से समृद्ध रहा। ऋषिकेश दा की सरल, संवेदनशील और मानवीय कहानियों में धर्मेन्द्र की सहज अभिनय शैली ने एक विशेष प्राण फूंका। दोनों के बीच कलाकार और निर्देशक से कहीं आगे बढ़कर आपसी सम्मान और भावनात्मक समझ का संबंध था। ऋषिकेश दा धर्मेन्द्र की आंतरिक संवेदनशीलता और नैसर्गिक अभिनय क्षमता को भली-भांति पहचानते थे, जबकि धर्मेन्द्र उनके सादे किंतु गहन सिनेमा के गहरे प्रशंसक रहे। यह संबंध उस दौर की मिसाल है, जहाँ सिनेमा केवल कला नहीं, बल्कि मनुष्यता की सच्ची अभिव्यक्ति हुआ करता था।धर्मेन्द्र के जीवन और व्यक्तित्व का एक अत्यंत स्नेहिल पक्ष उनके सलमान खान और खान परिवार के साथ साझा किए गए आत्मीय संबंधों में भी झलकता है। सलमान खान के पिता, प्रख्यात लेखक सलीम खान के साथ उनका गहरा सम्मान और अपनत्व का रिश्ता रहा, जो केवल पेशेवर नहीं, बल्कि पारिवारिक था। इस संबंध की नींव आपसी सम्मान, संवेदनशीलता और मूल्यों की साझेदारी पर टिकी थी।

सलमान खान के साथ धर्मेन्द्र का रिश्ता विशेष रूप से स्नेहपूर्ण रहा। वे सलमान को केवल एक सह-कलाकार या मित्र नहीं, बल्कि अपने परिवार का ही अंग मानते थे। कई अवसरों पर धर्मेन्द्र ने स्नेहपूर्वक स्वीकार किया कि वे सलमान को अपने 'तीसरे पुत्र' के रूप में देखते हैं। यह भाव किसी सार्वजनिक वक्तव्य से अधिक उनके व्यवहार, आशीर्वाद और निरंतर मार्गदर्शन में झलकता रहा।

सलमान के जीवन और करियर के विभिन्न चरणों में धर्मेन्द्र की उपस्थिति एक संरक्षक, मार्गदर्शक और शुभचिंतक के रूप में रही, बिना किसी दिखावे के, बिना किसी अपेक्षा के। यह संबंध उस पीढ़ीगत सौहार्द का प्रतीक है, जहाँ सिनेमा प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि पारिवारिक उत्तराधिकार और भावनात्मक निरंतरता बन जाता है।

यह आत्मीयता केवल व्यक्तियों तक सीमित नहीं रही, बल्कि पूरे खान परिवार के साथ धर्मेन्द्र के सौहार्दपूर्ण संबंधों में प्रतिबिंबित हुई एक ऐसा रिश्ता जो भारतीय सिनेमा की मानवीय परंपरा को रेखांकित करता है, जहाँ रिश्ते कैमरे के पीछे भी उतने ही सच्चे होते हैं जितने परदे पर।

जीवन के उत्तरार्ध में धर्मेन्द्र ने धीरे-धीरे सार्वजनिक चमक-दमक से दूरी बनाई और अपने फार्महाउस की शांति को अपनाया। उन्होंने जैविक खेती को अपनाया, सूर्योदय के साथ उठते, मिट्टी की सेवा करते और प्रकृति की लय में जीवन जीते। यह पलायन नहीं था यह घर वापसी थी।

जो ही-मैन कभी परदे पर शक्ति का प्रतीक था, वही अब मौन, मिट्टी और सूर्योदय में तृप्ति खोजता है।

श्री धर्मेन्द्र की विरासत सेलुलॉइड में कैद नहीं है; वह भारतीय सिनेमा की अंतरात्मा में जीवित है। वे उस युग का प्रतिनिधित्व करते हैं, जहाँ अभिनेता पहले स्वप्नद्रष्टा थे, फिर शिल्पकार, और सितारे

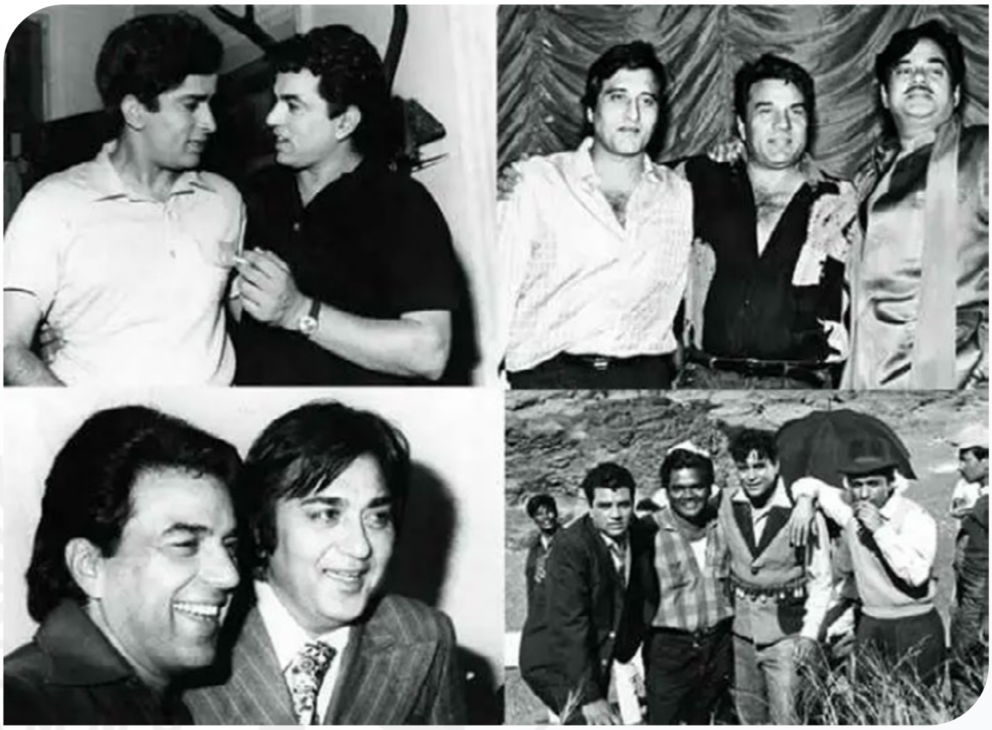

संयोगवश।उनसे मिलना यह स्मरण कराता है कि किंवदंतियाँ स्वयं को घोषित नहीं करतीं। वे अपनी महानता को सहजता से धारण करती हैं, धीमे स्वर में बोलती हैं और कैमरा बंद हो जाने के बाद भी एक ऊष्मा छोड़ जाती हैं।

"धर्मेन्द्र केवल भारतीय सिनेमा के 'ही-मैन' नहीं हैं,

वे उसकी धड़कती आत्मा, उसकी शांत अंतरात्मा और उसकी संवेदनशील चेतना हैं।"

एक उत्कृष्ट आत्मा, सिनेमा से गढ़ी हुई, विनम्रता से निर्देशित, और उस कला के प्रति सदा नतमस्तक, जिसे उन्होंने निःस्वार्थ प्रेम किया।

नाद-ए-वादियाँ
प्रकृति, नाद और आत्मा का सूफ़ियाना संवाद

शालिन एस. नायर | प्रशासनिक अधिकारी जनसंपर्क एवं प्रशासन

सहर की शफ़क़ में घुला जब आलाप-ए-नूर,
वादियों की ख़ामोशी बन जाए ख़ुद सुरूर।
कोहसार की साँसों में महके राग का साज़,
फ़िज़ा की पेशानी पे लिख जाए इश्क़ का राज़।

झरनों की झंकार में छनती ताल-ए-हयात,
कंकर भी सज्दा करें सुनकर नाद की बात।
बाद-ए-सबा के लबों पे ठहरी ठुमरी की तान,
पत्तों की सरगोशी में जागे रूह की जान।

दरिया रियाज़त में डूबा, जपता है इक नाम,
हर मौज में वहदत झलके, हर क़तरे में सलाम।
मेघ-मल्हार बरसाए रहमत की बरक़ात,
भीग जाए धरती भी ओढ़े इश्क़ की सौग़ात।

शाम की सुरमई पलकों में दमकता सुरूर,
ढलती किरनों के आँचल में सोया नूर-ए-हज़ूर।
रात की दरगाह में जलते ख़ामोशी के दीए,
चाँद क़व्वाली गाता है इश्क़ के रेशमी लिए।

साधक खो जाए सुर की बेख़ुदी के गुमान,
फ़ना की डगर से गुज़रे, बक़ा का पाए निशान।
नाम-ओ-निशाँ मिट जाए, रह जाए बस एक नाद,
रूह का हर ज़र्रा बन जाए सज्दे की फ़रियाद।

सहर की शफ़क़ में घुला जब आलाप-ए-नूर,
वादियों की ख़ामोशी बन जाए ख़ुद सुरूर।

आई आई एम जम्मू

पप्पू कुमार यादव | प्रशासनिक अधिकारी

सा विद्या या विमुक्ते यह आदर्श वाक्य हमारा है।
गुरु द्रोण जैसी मार्गदर्शन अर्जुन जैसी एकाग्रता का उद्देश्य हमारा है ।।

जगती की जान,जम्मू की शान और तीसरी पीढ़ी की संस्थाओं में अंतरराष्ट्रीय पहचान हूं।
अमृत काल का वर्तमान एवं विकसित भारत की राह हू।।

सौंदर्य की परिभाषा हूं, अग्रणी की अभिलाषा हूं।
सपनों के उड़ान लिए, हर दिल की आशा हूं ।।

आशीर्वाद प्राय पाता हूं, माता वैष्णो देवी के दरबार से।
चल पड़ा हूं मंजिल की तरफ, आप सभी के योगदान से।।

अग्रसर हूं उस पथ पर ताकि, वैश्विक उद्यमियों को तैयार करूं।
समावेशी समाज तथा कारपोरेट जगत में, मूल्यवान योगदान करूं ।।

गीता के मार्ग पर चलता हूं, फल की चिंता त्याग यहां ।
ज्ञान की गंगा बहती यहां, मोक्ष की राहें खुलती यहां।।

यहां हर छात्र एक सेनानी है,लक्ष्य की ओर बढ़ता ज्ञानी है ।
देश के लिए कुछ कर सके, वही सच्चा कर्मयोगी बन सके ।।

मैं सोच और नजरिया बदलता हूं, पर लक्ष्य नहीं बदलता हूं ।
शिक्षा का भंडार एवं सांस्कृतिक धरोहर का अभिमान हूं, संस्थानों में संस्थान राष्ट्रीय धरोहर का मिसाल हूं ।।

नई उमंग है, नई जोश है, नया सवेरा लिखेंगे।
नई सोच नई पीढ़ी के साथ नया कीर्तिमान रचेंगे।।

अभी तो बस शुरुआत है जवानी अभी बाकी है।
क़दम से कदम मिलाकर देश की सरताज बनना अभी बाकी है।।
अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण के साथ, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय हित, मुझ में समाहित है ।आप सभी के कामना के साथ, अभी बहुत कुछ करना बाकी है।।

नमन है इस धरती को जहां ज्ञान का दीप जल सका ।
नमन है पथ प्रदर्शक को जो हर दिल में साहस भर सका ।।

नेशन फर्स्ट मिशन ऑलवेज, यही मेरी पहचान है।
मैं भारत का लाल हूं, यह गर्व मेरा अभिमान है।।

स्वागत है आप सभी का इस पावन सांस्कृतिक नगरी में।
जहां संस्कृति महकती है वहीं धरोहर चमकती है।
इतिहास की मिट्टी से ही भविष्य की शक्ति बनती है।।

नेतृत्व,नवाचार और नैतिकता यह तीनों दीप जलते यहां।
हर कोने में आत्मविश्वास और राष्ट्र प्रेम पलते यहां।।

कदम-कदम पर वंदे मातरम, मन में केवल जय हिंद है।
मेरे जज्बों के आगे दुश्मन भी झुक जाते हैं, क्योंकि हम जीत की राहें खुद बनाते जाते हैं।।

जोश है सीने मे, और आंखों मे है सपना।
हर कठिनाई को समझा है, मैं बस अपना।।

जम्मू की मिट्टी से बना एक सिपाही हूं।
ज्ञान और संकल्प से सजा एक सच्चा राही हूं।।

जो मेरे सामने आया वह मेरा इम्तिहान बना और हर इम्तिहान से मैं और भी शानदार बना।।

जय हिंद

विकसित भारत @2047 : प्रशासनिक कर्मियों की भूमिका और उत्तरदायित्व

साक्षी जाम्बाल | एएओ (प्रशासन)

वर्ष 2047, जब हमारा देश अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी पूर्ण करेगा, उस समय "विकसित भारत" की संकल्पना को साकार करना हम सभी का साझा लक्ष्य है। *विकसित भारत @2047* केवल आर्थिक समृद्धि का सपना नहीं, बल्कि एक सक्षम, पारदर्शी, समावेशी और उत्तरदायी प्रशासनिक व्यवस्था का संकल्प है। इस लक्ष्य की प्राप्ति में प्रशासनिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे ही शासन और नागरिकों के बीच सेतु का कार्य करते हैं।

सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किए जाने वाले भारत सरकार (GOI) के आदेश, परिपत्र (Circulars) और सेवा नियम प्रशासनिक व्यवस्था को अनुशासित, पारदर्शी और उत्तरदायी बनाए रखने के लिए मार्गदर्शक का कार्य करते हैं। केंद्रीय सिविल सेवा (आचरण) नियम, 1964 के अंतर्गत प्रत्येक कर्मचारी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने कर्तव्यों का निर्वहन पूर्ण निष्ठा, ईमानदारी और निष्पक्षता के साथ करे। यह नियम स्पष्ट करता है कि कोई भी सरकारी कर्मचारी ऐसा कोई कार्य नहीं करेगा जिससे शासन की गरिमा एवं विश्वसनीयता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े।

भारत सरकार द्वारा जारी विभिन्न परिपत्रों में *समयबद्ध सेवा प्रदायगी, जन शिकायत निवारण, ई-गवर्नेंस तथा पारदर्शिता* को प्रशासन की प्राथमिक जिम्मेदारी के रूप में निर्धारित किया गया है। ये निर्देश इस बात पर बल देते हैं कि प्रत्येक कर्मचारी नागरिकों के प्रति संवेदनशील, उत्तरदायी और सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाए।

विकसित भारत @2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रशासनिक कर्मियों को केवल नियमों का पालन ही नहीं, बल्कि *कर्तव्यनिष्ठा को अपने स्वभाव का हिस्सा* बनाना होगा। कार्यालयों में समयबद्ध कार्य निष्पादन, भ्रष्टाचार से पूर्णतः मुक्त कार्यशैली, डिजिटल प्रक्रियाओं को अपनाना तथा जनकल्याणकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन, देश को विकसित राष्ट्र की श्रेणी में स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।

एक महिला नागरिक के रूप में मेरा दृढ़ विश्वास है कि जब प्रशासनिक अधिकारी और कर्मचारी अपने पद को केवल एक नौकरी नहीं, बल्कि राष्ट्रसेवा का माध्यम मानकर कार्य करेंगे, तभी "विकसित भारत @2047" का सपना वास्तविकता में परिवर्तित होगा। *ईमानदारी, पारदर्शिता और संवेदनशीलता* ही वह आधारशिला है, जिस पर एक सशक्त, आत्मनिर्भर और विकसित भारत का निर्माण संभव है।

प्रशासनिक व्यवस्था की गुणवत्ता ही राष्ट्र की प्रगति का प्रतिबिंब होती है। यदि प्रत्येक कर्मचारी अपने कर्तव्यों का निर्वहन पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी से करे, तो 2047 तक भारत को एक विकसित, सशक्त और आदर्श राष्ट्र बनने से कोई नहीं रोक सकता।

पर्यावरण संरक्षण : प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य

गरिमा कुशवाहा | एएओ (स्थापना)

पर्यावरण केवल हमारे चारों ओर फैला प्राकृतिक परिवेश नहीं है, बल्कि यही हमारे जीवन का आधार है। स्वच्छ वायु, शुद्ध जल, उपजाऊ भूमि और संतुलित जलवायु मानव अस्तित्व के लिए अनिवार्य हैं। परंतु तीव्र औद्योगीकरण, शहरीकरण और अनियंत्रित उपभोग के कारण आज पर्यावरण गंभीर संकट के दौर से गुजर रहा है। ऐसे में पर्यावरण संरक्षण प्रत्येक नागरिक का नैतिक, सामाजिक एवं संवैधानिक कर्तव्य बन गया है।

आज जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक चुनौती बन चुका है। बढ़ते तापमान, अनियमित वर्षा, पिघलते हिमनद तथा समुद्र-स्तर में वृद्धि इसके स्पष्ट संकेत हैं। वायु, जल एवं भूमि प्रदूषण के कारण न केवल पर्यावरण की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है, बल्कि मानव स्वास्थ्य पर भी इसके गंभीर दुष्प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं।

एक स्मरणीय अनुभव

मुझे आज भी अपना विद्यालय जीवन स्पष्ट रूप से याद है। मैं उस समय कक्षा नौवीं की छात्रा थी और झाँसी स्थित *सेंट फ्रांसिस कॉन्वेंट स्कूल* में पढ़ रही थी। एक दिन हमारे विद्यालय में "पर्यावरण जागरूकता सप्ताह" मनाया गया। हमें निर्देश दिया गया कि हम अपने-अपने घरों से एक-एक पौधा लाकर विद्यालय परिसर में लगाएँ।

मैंने अपने घर के आँगन से एक छोटा सा नीम का पौधा लाकर रोपा। जब मैंने उसे मिट्टी में लगाया, तब वह मेरी घुटनों से भी छोटा था। हमारी शिक्षिका ने हमें समझाया कि जैसे हम अपनी पढ़ाई और भविष्य को संवारते हैं, वैसे ही इन पौधों की देखभाल करना भी हमारा दायित्व है। पूरे वर्ष हम बारी-बारी से उस पौधे को पानी देते, उसके आसपास की मिट्टी साफ करते और उसकी बढ़त को देखते रहते थे।

कुछ वर्षों बाद जब मैं पुनः उस विद्यालय गई, तो वही छोटा सा पौधा एक विशाल वृक्ष में परिवर्तित हो चुका था। उसकी छाया में बच्चे खेल रहे थे और पक्षी चहचहा रहे थे। उस क्षण मुझे यह अनुभव हुआ कि **पर्यावरण की रक्षा केवल एक विचार नहीं, बल्कि भविष्य के लिए बोया गया एक बीज है, जो समय के साथ जीवनदायी वृक्ष बन जाता है**।

नागरिकों की भूमिका

पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारों या संगठनों की जिम्मेदारी नहीं है। प्रत्येक नागरिक को जल संरक्षण, ऊर्जा की बचत, वृक्षारोपण, कचरे के पृथक्करण, पुनर्चक्रण तथा एकल-उपयोग प्लास्टिक से परहेज जैसी आदतों को अपनाना चाहिए। छोटे-छोटे कदम भी सामूहिक रूप से बड़े परिवर्तन का आधार बनते हैं।

यह कहा जा सकता है कि पर्यावरण संरक्षण कोई विकल्प नहीं, बल्कि हमारी आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित, स्वस्थ और संतुलित भविष्य की अनिवार्य आवश्यकता है। जब तक प्रत्येक नागरिक इस कर्तव्य को व्यक्तिगत जिम्मेदारी के रूप में नहीं अपनाएगा, तब तक स्थायी विकास का लक्ष्य अधूरा रहेगा।

स्वस्थ पर्यावरण ही सशक्त राष्ट्र की पहचान है।

पुस्तकालय हूँ मैं, मैं हूँ ज्ञान का खजाना

नीरज | वरिष्ठ पुस्तकालय एवं सूचना सहायक, नालंदा पुस्तकालय

पुस्तकालय हूँ मैं, मैं हूँ ज्ञान का खजाना
बड़े मान सम्मान से, देखो मुझको सजाना
वक़्त बदला हैं और, मैं भी बदल गया हूं
कैनाल रोड परिसर में एक कमरे मे था, जगति में वृहद रुप में हो गया हूं
प्रबंधन और सहयोगियों ने दिया , मुझको एक सुन्दर आकार
आईआईएम जम्मू में हुआ, आधुनिक पुस्तकालय का सपना साकार
आकार से ही बड़ा नहीं मै, नए नए विचारो का संगम हूँ
तकनीकी और कौशल का, एक सुन्दर सा मिश्रण हूँ
सेवाओं और संसाधनों से, मै हूँ भरपूर
प्रांगण में रहने और न रहने वालो, के लिए नहीं हूँ दूर
शांति का वातावरण है, न ही कोई कोलाहल है
यहाँ तो केवल और केवल, पाठको की ही हलचल है
नहीं मिलेगा नजारा वो, जो पुस्तकालय की मेज पर मिलता है
एक दूसरे की देखकर सूरत, जब चेहरा खिल सा जाता है
नया रंग है नया रूप है , आईआईएम जम्मू के पुस्तकालय का
मंत्रमुग्ध हो जाता जो, भ्रमण करता है इस प्रांगण का
आईआईएम जम्मू के पुस्तकालय में है, विविध ग्रंथो का भंडार
एक बार सेवा का मौका दे, आयेंगे फिर बारम्बार

हम सबका भारत

डॉ. आशीष ईशर | राजभाषा अधिकारी

हम सब हैं एक, यही हमारा गीत,
रंग, भाषा, धर्म में नहीं कोई भेद।
हाथ में हाथ, चलें सीना तान,
बनाएँ भारत को सबसे महान।

उत्तर की ठंडी हवा, दक्षिण का गगन,
पश्चिम की मिट्टी, पूर्व का मैदान।
सब मिलकर गाएँ, प्रेम का संदेश,
राष्ट्र की एकता में है सुख और पैगाम।

एकता ही शक्ति, एकता ही बल,
सबका सम्मान करें, यही हमारा हल।
हम सब हैं साथी, हम सब हैं मित्र,
भारत की धरती पर बनाये यह रेखा चित्र।

अश्रुयामा: एक अनंत संघर्ष

अभिनव पांडे | एमबीए एचए और एचएम (2024-26)

अश्रुयामा अब किसी अज्ञात वन में नहीं भटकता है,
वह तो हमारी चेतना के अंधकार में अटका है।
वहाँ, जहाँ विश्वास की पुरानी लाशें दबी पड़ी हैं,
और प्रश्नों के कंकाल की पहरेदारी जहाँ खड़ी है।

मैं किसी ईश्वर में नहीं, मित्रों की गूंज में यकीन रखता हूँ,
समय से भी टकराऊँ उन शब्दों को मैं अपने करीब रखता हूँ।
क्योंकि मैं हमें जो सताता देखूँ, जो सह न सके,
कठोर पत्थरों के आगे, मन कभी टिक न सके।

मैं मंदिरों के दीप नहीं, अपनी कड़वी सच्चाई को बुझाता,
हर इंसान, हर शख़्स को बस मनुष्य का भ्रम ही देता।
देवता तो केवल हमारे डर का एक प्राचीन भाष्य है,
जो हमारी अपनी ही कमज़ोरियों की परिभाषा है।

अश्रुयामा अब कोई योद्धा नहीं, बस एक जिंदा विचार है,
जो मरने से करता रहा इनकार, बार-बार इंकार है।
जहाँ पाखंड और साहस एक ही शरीर में बसते हैं,
वहीं मनुष्य के भीतर अनंत संघर्ष रहते हैं।

हम उसे जिंदा रखते हैं, क्योंकि हमें अपना पाप स्वीकार नहीं,
अपने भीतर के जहर से, हमें कोई सरोकार नहीं।
हर पीढ़ी उसे नया नाम देकर, खुद को बचाती है,
कभी पाप, कभी कर्म, तो कभी भाग्य बताती है।

हर अश्रु उस में, उसकी साँसें आज भी बाकी हैं,
हर मौन प्रार्थना में, उसकी पहचानें पलती हैं।
उस आधे सत्य में, जिसे हम पूरा मान लेते हैं,
हम अपने ही भीतर के अश्रुयामा को, हर रोज़ जानते हैं।

संविधान दिवस – भारत

संविधान दिवस उत्सव – मेरी नज़रों से

अभिषेक सिंह दुबे | विद्यार्थी – एमबीए 09

छब्बीस नवम्बर की भोर में जैसे ही सूर्य की पहली किरणें जगती परिसर पर पड़ीं, वातावरण में एक अजीब-सी पवित्रता घुल गई। यह कोई साधारण दिन नहीं था। यह वह दिन था जहाँ लोकतन्त्र की आत्मा, हमारे संविधान का प्रकाश, पूरे परिसर में जैसे जीवित होकर फैल रहा था।

वातावरण में श्रद्धा, उत्सुकता और देशप्रेम की सुगंध थी और उसी सुगंध में हम सब एक नई ऊर्जा से भर उठे।

इस अवसर पर हमारे संस्थान के निदेशक महोदय प्रोफेसर बी. एस. सहाय की वह स्पष्ट और प्रेरक दृष्टि भी मन में बार-बार गूँजती रही, जो वे प्रत्येक मंच से दोहराते हैं— "राष्ट्र प्रथम।"

उनका यह विश्वास है कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं, बल्कि राष्ट्र और समाज के लिए उपयोगी नागरिक तैयार करना है।

विकसित भारत 2047 की संकल्पना केवल एक लक्ष्य नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारी जिम्मेदारी है।

भारतीय प्रबंध संस्थान जम्मू जैसे राष्ट्रीय महत्व के संस्थान के विद्यार्थी होने के नाते यह हमारा नैतिक और सामाजिक दायित्व बनता है कि हम अपने ज्ञान, नेतृत्व क्षमता और संवेदनशीलता का उपयोग देशहित में समाज को आगे बढ़ाने के लिए करें।

संविधान दिवस का यह आयोजन हमें यह याद दिलाने आया था कि—

अधिकारों के साथ–साथ कर्तव्यों का निर्वहन ही सच्ची देशभक्ति है।

और जब संस्थान का दृष्टिकोण राष्ट्र प्रथम हो, तो विद्यार्थियों का पथ स्वतः ही राष्ट्रनिर्माण की ओर अग्रसर हो जाता है।

प्रातःकालीन आयोजन मण्डपम में प्रारम्भ हुआ, जिसकी गरिमा बढ़ाने हेतु आदरणीय प्रोफेसर जबीर अली, डीन (अध्यापन एवं अनुसंधान), मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

उनके प्रेरक शब्दों के पश्चात् मुझे वह सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिसे अपने जीवन की सबसे सुंदर स्मृतियों में गिनूँगा

पूरे संस्थान के सामने खड़े होकर संविधान की प्रस्तावना की शपथ दिलाना।

जब मैंने मंच पर खड़े होकर प्रस्तावना पढ़नी आरम्भ की और चारों ओर विद्यार्थी तथा गुरुजन सम्मानपूर्वक, एक स्वर में मेरे साथ दोहराने लगे तब मन बचपन में लौट गया।

विद्यालय के दिनों में, जब मैं विद्यालय का कप्तान था, प्रार्थना सभा में सभी विद्यार्थियों को अनुशासन में खड़े रहकर प्रतिज्ञा दिलाया करता था।

आज वही क्षण, एक नए रूप में, अनेक गुना गरिमा के साथ मेरे सामने खड़ा था।

उस समय ऐसा लगा मानो

संविधान केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि हमारे भीतर प्रवाहित होती एक जीवंत धारा है, जो हमें जोड़ती है, समृद्ध करती है और दिशा देती है।

मेरी आँखों में गर्व और भावुकता की चमक थी, और समूचा वातावरण राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत।

शपथ के पश्चात् आरम्भ हुआ सांस्कृतिक कार्यक्रम, जहाँ विद्यार्थियों ने गीत, नृत्य और वाचन के माध्यम से संविधान की आत्मा को जीवंत कर दिया।

एक प्रस्तुति में, एक विद्यार्थी ने बड़े जोश से कहा

"अधिकार माँगने से नहीं, निभाने से प्राप्त होते हैं।"

पूरे सभागार ने तालियों से इस विचार का स्वागत किया।

नृत्य प्रस्तुतियों के दौरान एक रोचक घटना घटी।

एक विद्यार्थी मंच पर आते ही अपने जोश में कुछ कदम आगे निकल गया।

दर्शक मुस्कुरा उठे, सहयोगियों ने संकेत किया और वह हँसते हुए अपनी ताल वापस पकड़ गया।

उसी क्षण लगा—

यही छात्र जीवन की चंचलता और सौन्दर्य है।

इसके बाद संविधान विषयक वाद–विवाद प्रतियोगिता हुई, जहाँ विद्यार्थियों ने साहसपूर्वक अपने विचार रखे।

एक प्रतिभागी ने कहा

"संविधान हमें बोलने की स्वतंत्रता देता है, पर साथ ही यह भी सिखाता है कि कब मौन राष्ट्रहित में होता है।"

यह पंक्ति देर तक मन में गूँजती रही।

उनकी बातों में भविष्य की आशा दिखाई देती थी।

साँझ ढलते ही कार्यक्रम का सबसे प्रतीक्षित क्षण आया

सीमा सुरक्षा बल की तेरहवीं तन्नौट वाहिनी के वीरों का हमारे परिसर में आगमन।

उनके साथ आए विशेष कुत्ता–योद्धा दल ने जिस कौशल, अनुशासन और फुर्ती का प्रदर्शन किया, उसे देखकर विद्यार्थियों की आँखें विस्मय से फैल गईं।

उनकी दौड़ में बिजली की गति, छलाँगों में शक्ति, और प्रशिक्षकों के संकेतों पर उनकी त्वरित प्रतिक्रिया यह सब देखकर यह महसूस हुआ कि

ये केवल पशु नहीं,
ये धरती–माता की रक्षा–रेखा हैं,
जो मौन रहकर भी देश के लिए प्राण देने को तत्पर रहते हैं।

तन्नौट वीरों और उनके कुत्ता–योद्धाओं के सम्मान में मुझे कविता प्रस्तुत करने का अवसर मिला।
पूरा वातावरण शांत हो गया — जैसे हवा भी स्तब्ध होकर सुन रही हो।
मेरे हृदय की भावना शब्दों में ढलकर बहने लगी

आज संविधान का पर्व है,
दिल में गर्व का रंग है,
बीएसएफ के वीर जहाँ,
छाती पर तिरंगा बाँध चलते हैं,
वहीं उनके संग वफ़ादार साथी—
चार पंजों पर देशभक्ति ढोते हैं।
ये कोई साधारण कुत्ते नहीं,
ये सरहदों की आँखें कहलाते हैं,
एक इशारा मिले जो बस—
दुश्मन को धूल चटाते हैं।

उनके दौड़ में बिजली की तेज़ी,
उनके भौंक में रण की आग,
ये धरती-माँ के रक्षक हैं,

जिन्हें सलाम करे पूरा फलक, पूराआकाश।

जो 26/11 की रात,

हमें हमेशा याद दिलाती है,

कि आज़ादी सिर्फ़ शब्द नहीं—

ये किसी की शहादत के बाद आती है।

किसी माँ ने बेटा खोया,

किसी बहन ने भाई,

पर भारत ने पाया वो इतिहास—

जो वीरों की लहू में लिखी लिखाई।

आज हम उन शहीदों को,

अपने दिल में फिर से जगाते हैं—

एक छोटा-सा शो नहीं,

ये उनकी यादों को प्रणाम कराते हैं।

बीएसएफ के वीरों को,

और उनके डॉग वॉरियर्स को सलाम,

वो चलते हैं तो सीमा चलती है,

वो रुक जाएँ—तो थम जाए हिंदुस्तान।

जय हिन्द।

वंदे मातरम्।

जब अंतिम पंक्तियाँ कही
"वे चलते हैं तो सीमा चलती है,
वे रुक जाएँ—तो ठहर जाए हिंदुस्तान।"

तो पूरा मैदान तालियों से गूँज उठा।
मेरा हृदय गर्व से भर गया।
यह केवल कविता–पाठ नहीं था—
यह उन अमर रक्षकों के प्रति नमन था, जिनकी वजह से हम स्वतंत्र साँस लेते हैं।

रात्रि में कार्यक्रम का समापन संविधान की मूल भावना को आत्मसात करने की प्रतिज्ञा के साथ हुआ।
आज IIM जम्मू केवल एक शिक्षण–संस्थान नहीं रहा—
यह राष्ट्रनिर्माण की प्रयोगशाला बन गया, जहाँ युवा अपने कर्तव्यों का अर्थ समझते हैं और देश के प्रति समर्पित बनते हैं।

मेरी नज़रों में यह संविधान दिवस—
अनुशासन, श्रद्धा, देशभक्ति, संस्कृति, और चेतना का दिव्य संगम था।

हमने संविधान को केवल पढ़ा नहीं—
उसे जिया, महसूस किया और अपने हृदय में स्थापित किया।

जय हिन्द।
वन्दे मातरम्।

घर से दूर, खुद के पास

मानसी गुप्ता | एमबीए24147

अब जिंदगी दो सूटकेस में सिमट कर रह गई है।
शहर बदल रहे हैं, तो कुछ आदतें भी बदल गई हैं।
अब सुबह समय पर न उठूँ, तो कोई जगाने वाला नहीं होता,
नाश्ता न करूँ तो टिफिन खिलाने वाला भी कोई नहीं होता।
रोज़ सफ़ाई भी खुद ही करनी है, और कपड़े भी खुद ही धोने हैं,
शाम को थक-हार कर आओ, तो बर्तन भी खुद ही धोने हैं।
बचपन से सिखाया गया था कि अपने सपनों के लिए सब करना ज़रूरी है,
इन सब से शायद किसी को कोई शिकायत नहीं,
पर घर से दूर यह मायूस कर नहीं है।
भागता हुआ शहर, ऊँची इमारतें — ये सब होगा, पता था,
पर यहाँ सबसे ज़्यादा खुद को संभालना होगा — ये किसी ने नहीं बताया था।
अपना शहर, अपने लोग, अपना घर — सब एक याद बन जाएंगे,
जिगरी यारों से मिलने के लिए अब महीनों लग जाएंगे,
माँ के हाथ के स्वाद के लिए तरसते रह जाएंगे,
पर इस भाग-दौड़ में हम अपने पैरों पर खड़े हो जाएंगे।
अब आज अकेले होने पर किसी से बात करने का मन नहीं करता,
किसी को पास न पाकर खुद मन अब बेचैन नहीं होता।
आदत सी हो गई है अब इस शहर के बीच कमरों में अकेले रहने की,
अपने ही सपनों की दुनिया में हर वक़्त खोए रहने की।
सबसे दूर रहकर भी खुद से प्यार करना इसने सिखाया है,
इस शहर ने मुझे बहुत कुछ सिखाया है।
हाँ, इस शहर ने मुझे बहुत कुछ सिखाया है।

मंज़िल की ओर

मानसी गुप्ता | एमबीए24147

खुद में कमियों तराश के उन्हें दूर करना है,
खुद को कामयाबी के काबिल बनाना है।

हर ख़्वाब को हक़ीक़त में बदलना है,
खामोश हो जाए सब, कुछ ही सफलता को पाना है।

मंज़िलों तक के फ़ासले तय करने हैं,
कई रास्तों पर अकेले चलना भी सीखना है।

गिर गए तो संभलना है, फिर और ऊँचा उड़ना है,
पंछी भी देखते रह जाए, कुछ यूँ आसमान को छूना है...

मैं रुकने वालों में से नहीं

मानसी गुप्ता | एमबीए24147

उड़ता हूँ खुले आसमान में, अब गिरने का डर नहीं,
गिर के फिर बिखर गया, तो सीख गया हूँ संभलना सही।

फिर उठूँगा, फिर चलूँगा, फिर उड़ूँगा भी सही,
डर के रुक जाऊँ? ऐसा तो मैं कभी था ही नहीं...

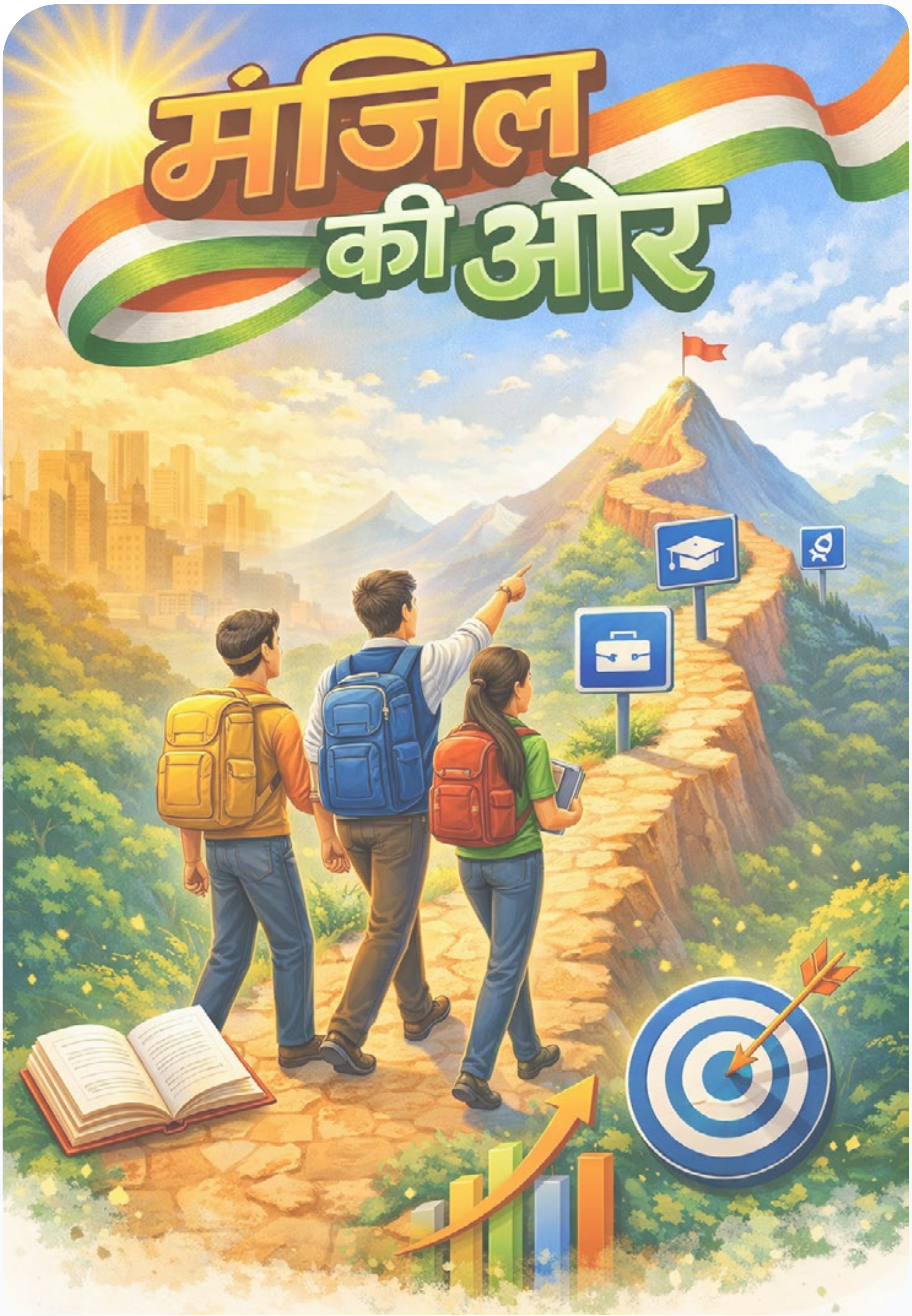
मंजिल
की ओर

बंधुत्व और विविधता: भारत की राष्ट्रीय शक्ति के स्तंभ

विकसित भारत की दिशा में एक दृष्टि

श्री विजय अनंत कांबले | प्रशासनिक अधिकारी – परियोजना

भारत की विकसित भारत बनने की यात्रा केवल आर्थिक विकास, तकनीकी नवाचार और अवसंरचना निर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि इसकी वास्तविक शक्ति सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक एकता और संस्थागत परिपक्वता में निहित है। भाषाई, सांस्कृतिक और भौगोलिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध भारत में बंधुत्व और एकता केवल आदर्श नहीं, बल्कि जीवन के व्यवहारिक मूल्य हैं। भारत की सबसे बड़ी शक्ति उसकी विविधता में निहित है, जहाँ अनेक भाषाएँ, परंपराएँ और पहचानें सामंजस्य के साथ सह-अस्तित्व में रहते हुए राष्ट्रीय प्रगति में सामूहिक योगदान देती हैं। शैक्षणिक संस्थान, खेल के मैदान, सांस्कृतिक मंच, अनुसंधान प्रयोगशालाएँ और नागरिक मंच वे केंद्र हैं जहाँ यह विविधता राष्ट्रीय शक्ति में परिवर्तित होती है।

भारत के संगीतकारों, नर्तकों और सिने कलाकारों ने राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक गौरव को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित किया है। पंडित रवि शंकर, पंडित भीमसेन जोशी, उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान, उस्ताद अमजद अली ख़ान, उस्ताद ज़ाकिर हुसैन और उस्ताद अल्ला रक्खा जैसे हिंदुस्तानी संगीत के महान कलाकारों के साथ-साथ एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी, डॉ. एम. बालमुरलीकृष्ण, के.जे. येसुदास और के.एस. चित्रा जैसे कर्नाटक संगीत के महान विभूतियों ने भारत की संगीत परंपरा को विश्व मंच तक पहुँचाया है और देश के भीतर भाषाई व क्षेत्रीय सीमाओं से परे जनमानस को जोड़ा है। कथक नृत्य परंपरा, चतुर्भुज राठौड़ जैसे लोक कलाकार तथा अन्य क्षेत्रीय कलाकार अपनी स्थानीय विरासत को संरक्षित रखते हुए उसे राष्ट्रीय चेतना से जोड़ते हैं। इलैयाराजा, जगजीत सिंह, पंडित शिवकुमार शर्मा और पंडित विश्वमोहन भट्ट जैसे समकालीन कलाकार शास्त्रीय गहराई, नवाचार और सांस्कृतिक संवाद के माध्यम से वैश्विक पहचान स्थापित करते हैं। हिंदी, तमिल, तेलुगु, मलयालम, मराठी और बंगाली सिनेमा की परस्पर सहयोगात्मक प्रस्तुतियाँ साझा मानवीय मूल्यों और सांस्कृतिक एकात्मता को सुदृढ़ करती हैं।

भारतीय संगीत कलाकारों का उदाहरण जुबिन मेहता, चन्नी सिंह, लता मंगेशकर और बिड्डु है। उन्हें कला और संस्कृतियों में सहयोग करने के उनके प्रयासों ने राष्ट्रीय संगीत एकीकरण और वैश्विक सांस्कृतिक संबंधों का निर्माण किया है। भाषाई, भौगोलिक और राष्ट्रीय सीमाओं को पार करने की संगीत की क्षमता को उनके संबंधित कलात्मक प्रक्षेपवक्र दिखाते हैं, जिससे वे एकता के एक शक्तिशाली साधन और मानव अभिव्यक्ति के एक साझा साधन के रूप में कार्य करते हैं।

भारत को बार-बार खेल की दुनिया में वैश्विक मानचित्र पर रखा गया है, विशेष रूप से क्रिकेट में महान खिलाड़ी जैसे सुनील गावस्कर, कपिल देव, मोहम्मद अजहरुद्दीन, सचिन तेंदुलकर, सौरव गांगुली, राहुल द्रविड़, महेंद्र सिंह धोनी, वीरेंद्र सहवाग, विराट कोहली, युवराज सिंह, रोहित शर्मा और इरफान पठान। इन खिलाड़ियों में टीम वर्क, अनुशासन, नेतृत्व और वापसी की क्षमता जैसे गुण हैं. वे देश भर से आते हैं, विभिन्न भाषाओं बोलते हैं और जीवन के कई क्षेत्रों से आते हैं। उनकी सफलताओं ने भारत के गौरव, सामाजिक एकता और विविधता की शक्ति को उजागर किया है, साथ ही देश को दुनिया भर में प्रशंसा मिली है।

खेल राष्ट्रीय एकता का सशक्त माध्यम है, जहाँ विविध क्षेत्रीय पहचान तिरंगे के नीचे एकजुट होती हैं। नीरज चोपड़ा, पी.वी. सिंधु, मैरी कॉम, बजरंग पुनिया, द्यूती चंद जैसे अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी और राष्ट्रीय हॉकी व क्रिकेट टीमें देश के विभिन्न राज्यों का प्रतिनिधित्व करते हुए सामूहिक गौरव की भावना उत्पन्न करती हैं। खेल अनुशासन, टीम भावना, धैर्य और नैतिक प्रतिस्पर्धा जैसे मूल्यों को विकसित करता है, जो नेतृत्व और राष्ट्र निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

खेल की दुनिया में, विशेष रूप से क्रिकेट में, सुनील गावस्कर, कपिल देव, मोहम्मद अजहरुद्दीन, सचिन तेंदुलकर, विनोद कांबली, सौरव गांगुली, राहुल द्रविड़, महेंद्र सिंह धोनी, वीरेंद्र सहवाग, विराट कोहली, युवराज सिंह, रोहित शर्मा और इरफान पठान जैसे सितारे, बैडमिंटन सितारों प्रकाश पादुकोण, पुलेला गोपीचंद, P.V. सिंधु, साइना नेहवाल, और महान टेनिस खिलाड़ी महेश भूपति, लिएंडर पेस और सानिया मिर्जा और कई अन्य लोगों ने बारबार भारत को वैश्विक मानचित्र पर स्थापित किया है। देश के कोने कोने से आने वाले, विभिन्न भाषा बोलने वाले और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले, इन खिलाड़ियों में टीम वर्क, अनुशासन, नेतृत्व और वापसी करने की क्षमता जैसे गुण शामिल हैं। उनकी प्रशंसा ने भारत को अंतर्राष्ट्रीय प्रशंसा दिलाने के अलावा और भी बहुत कुछ किया है; उन्होंने राष्ट्रीय गौरव को भी बढ़ावा दिया है, सामाजिक एकता को बढ़ावा दिया है, और भारत की विविधता की स्थायी ताकत को उजागर किया है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियाँ भी विविधता में एकता का सशक्त उदाहरण हैं। सी.वी. रमन, होमी भाभा और डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जैसे वैज्ञानिकों से लेकर इसरो, आईआईटी, भारतीय प्रबंधन संस्थान और उन्नत अनुसंधान केंद्रों के आधुनिक नवप्रवर्तकों तक, सभी ने सामूहिक ज्ञान और सहयोग से राष्ट्रीय प्रगति को गति दी है। अंतरिक्ष अनुसंधान, स्वास्थ्य सेवाएँ, डिजिटल नवाचार और स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा को सुदृढ़ करते हैं।

विज्ञान, अनुसंधान और बौद्धिक नेतृत्व के क्षेत्र में भारत ने विश्व को अनेक प्रेरणादायी विभूतियाँ प्रदान की हैं। नोबेल पुरस्कार विजेता प्रो. वेंकटरामन रामकृष्णन (वेंकी) को वर्ष 2009 में रसायन विज्ञान का नोबेल पुरस्कार राइबोसोम की संरचना और कार्यप्रणाली पर उनके अभूतपूर्व अनुसंधान के लिए प्रदान किया गया। उनका शोध आधुनिक जैव-विज्ञान, औषधि विकास और मानव स्वास्थ्य के क्षेत्र में क्रांतिकारी सिद्ध हुआ है। इसी प्रकार, प्रो. अमर्त्य सेन को वर्ष 1998 में अर्थशास्त्र का नोबेल पुरस्कार कल्याण अर्थशास्त्र, सामाजिक चयन सिद्धांत तथा मानव विकास के क्षेत्र में उनके मौलिक योगदान के लिए मिला। उन्होंने विकास को केवल आर्थिक वृद्धि तक सीमित न मानते हुए शिक्षा, स्वास्थ्य, समान अवसर और मानवीय गरिमा को केंद्र में रखा। इन दोनों विद्वानों का वैश्विक योगदान यह दर्शाता है कि भारत की बौद्धिक शक्ति उसकी विविध सोच, मानवीय दृष्टिकोण और समावेशी मूल्यों से सशक्त होती है, जो राष्ट्रीय एकता और वैश्विक प्रतिष्ठा दोनों को मजबूत करती है।

महात्मा ज्योतिराव फुले और सावित्रीबाई फुले, विनोबा भावे, डॉ. रवींद्र कोल्हे, डॉ. स्मिता कोल्हे, बाबा आमटे और परिवार, सुनील दत्त, नरगिस दत्त, डॉ. वर्गीज कुरियन, इला भट्ट, मेधा पाटकर, और कैलाश सत्यार्थी, पद्मश्री डॉ. मिलिंद पी. कांबले और अन्य लोगों ने विभिन्न राज्यों में समावेश, सशक्तिकरण और समान विकास का समर्थन किया है; साथ ही, जमीनी स्तर के सामाजिक कार्यकर्ता सामुदायिक एकता, नागरिक जिम्मेदारी और नैतिक आचरण को बढ़ावा देते हैं। उनके प्रयास इस बात का उदाहरण देते हैं कि कैसे साझा मूल्य और सामूहिक कार्रवाई राष्ट्रीय एकजुटता को बढ़ावा देती है।

राजनीतिक नेतृत्व ने भारत में विविधता में एकता की अवधारणा को संस्थागत स्वरूप प्रदान किया है। सरदार वल्लभभाई पटेल और महात्मा गांधी से लेकर वर्तमान नेतृत्व तक, संघीय व्यवस्था, भाषाई समावेशन तथा अंतर-राज्यीय सहयोग को निरंतर सुदृढ़ किया गया है। शिक्षा, संस्कृति संरक्षण और क्षेत्रीय विकास से संबंधित नीतियाँ यह प्रमाणित करती हैं कि विविधता कोई बाधा नहीं, बल्कि राष्ट्रीय शक्ति का मूल आधार है।

भारत की वास्तविक समृद्धि इस तथ्य में निहित है कि वह बहुलता को सामंजस्य में और विविधता को सामूहिक शक्ति में परिवर्तित करता है। संगीतकारों, खिलाड़ियों, वैज्ञानिकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और राजनीतिक नेतृत्व के योगदान से यह स्पष्ट होता है कि स्थानीय उत्कृष्टता राष्ट्रीय पहचान को सुदृढ़ करती है। भारतीय प्रबंधन संस्थान जैसे उच्च शिक्षण संस्थान इस राष्ट्रीय एकात्मता के जीवंत उदाहरण हैं, जहाँ बहुभाषिक वातावरण, अंतर्विषयक अनुसंधान और नेतृत्व विकास के माध्यम से नैतिकता, सहयोग और समावेशिता को बढ़ावा दिया जाता है।

भारत का वैश्विक नेतृत्व की ओर अग्रसर होना केवल आर्थिक क्षमता से नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और संस्थागत एकता से निर्धारित होगा। बंधुत्व, विविधता में एकता और साझा उत्कृष्टता की भावना भारत को रणनीतिक रूप से सशक्त बनाती है। संगीत, खेल, विज्ञान, समाज सेवा और शासन के सभी क्षेत्रों में भारत यह सिद्ध करता है कि उसकी शक्ति उसकी विविधता में और उसकी महानता उसकी एकता में निहित है। **श्री नरेंद्र मोदी, माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार** के नेतृत्व में यह भावना और अधिक सुदृढ़ होकर राष्ट्र निर्माण की दिशा में निरंतर अग्रसर है।

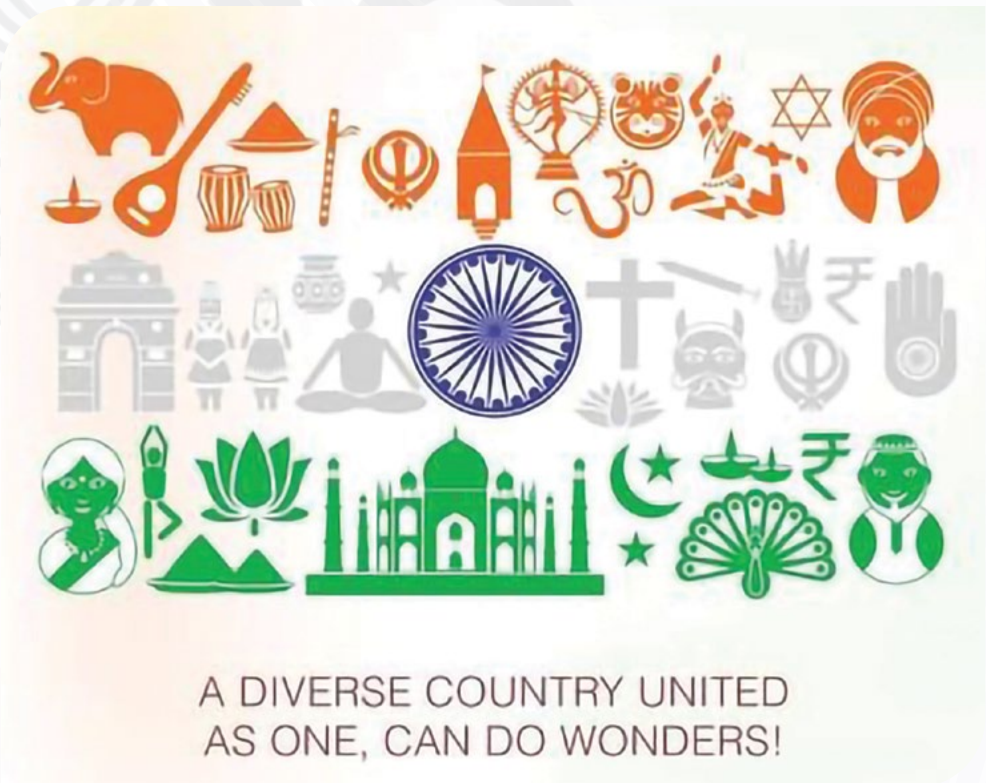

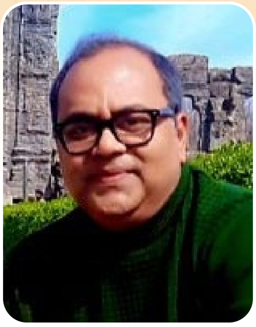

उत्कर्ष की राह पर आईआईएम जम्मू

डॉ अतनु दत्ता | आईआईएम जम्मू

हिमालय की गोद में खिला उजियारा ज्ञान,
आईआईएम जम्मू ने गढ़ा है उत्कृष्टता का मान।
निदेशक प्रोफेसर विद्या शंकर सहाय के दूरदर्शी नेतृत्व में जलता विकास-दीप,
हर ओर बिखरता है कर्म, मूल्य और प्रतीक।

देश-विदेश की मान्यताओं से मिला नया आसमान,
राष्ट्रीय रैंकिंग में बढ़ता संस्थान का सम्मान।
तकनीक और नवाचार का जहाँ सशक्त प्रवाह,
शोध से जगमगाता है प्रगति का हर राह।

कक्षा में प्रोफेसरों की विद्वता का उजास,
ज्ञान-साधना से मिलता है भविष्य को प्रकाश।
छात्रों की मेहनत रचती नित नूतन इतिहास,
उनकी सफलता में चमकता संस्थान का उजास।

कर्मशील गैर-शिक्षण स्टाफ का अद्भुत योगदान,
हर प्रयास से खड़ा हुआ यह गौरवपूर्ण संस्थान।
बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के मार्गदर्शन का अभिनंदन,
विशेष धन्यवाद पद्मश्री डॉ. मिलिंद काम्बले को शत-शत वंदन।

देश के सुदूर कोनों से आते छात्र हमारा भारत महान,
कश्मीर से कन्याकुमारी तक बिखरी विविध पहचान।
कृतज्ञता है शिक्षा मंत्रालय की कृपा-धारा को,
केंद्र और जम्मू-कश्मीर सरकार के सहयोग अपार को।

माता-पिता के विश्वास का हम रखते मान,
उनकी आशाओं ने सँवारा हर विद्यार्थी का स्वप्न-गान।
हर ओर फैली आशा, हर पल प्रगति की चाह,
आईआईएम जम्मू लिख रहा स्वर्णिम भविष्य की एक राह।

क्या ही अनकही सी ये भावना

वंदना एडविन | निदेशक के सचिव

क्या ही अनकही सी ये भावना,
अधूरी सी हर एक कामना,
वंचित सा प्रेम, गहरा है दर्द—
दूर होना है भय का वर्ण।
मीलों दूर अपने प्यार से,
फिर भी धैर्य है मेरे साथ में,
मन को ये पीड़ा करती भेदन—
हाँ, दूरी है ये भयावह स्पंदन।
बीते दिन थे धूप से भरे,
नए रास्ते हैं सपनों से सजे,
शुभकामना, हौसला, उम्मीद का रंग—
पर दूरी लगे जैसे भारी जंग।
उस फीके से इंद्रधनुष के पार,
वादों की गूँज, यादों की पुकार,
फिर मिलेंगे हम हँसी के साथ,
गले लगेंगे, थामेंगे हाथ,
शाम ढलेगी अपनों के संग,
और सवेरा लाएगा नयी उमंग—
पर मीलों दूर रहना हर क्षण,
लगता है जैसे भयावह बंधन।

मुझे तुम नहीं चाहिए, ऐ विलासिता,

मुझे तुम नहीं चाहिए, ऐ शोहरत।

मुझे तो बस तुम चाहिए,

तुम संग हँसी, तुम संग शरारत।

बारिश होती है, ठंडी हवा का एहसास,

ऐसे में, जैसे थम गया कुछ खास।

और जब सोचती हूँ उन दिनों को, उन रास्तों को,

समय और लहरें—क्या हमें इसी किनारे पर रहना चाहिए?

तुम्हारी झनकार भरी आवाज़ अब भी कानों में गूँजती है...

बहुत से हैं जिन्हें मैं "प्यारा" कहती हूँ,

पर मेरे लिए तो बस वह ही अनमोल हैं—

तुम, मेरे बच्चों... सिर्फ तुम, जिन्हें मैं सबसे ज्यादा चाहती हूँ।

उद्घाटन की तस्वीरें

“त्रिकुटा” हिंदी पत्रिका का पांचवां अंक जारी

युवा संसद 2025 का उद्घाटन

कवि सम्मेलन - हिंदी पखवाड़ा 2025

MBA
हिंदी पखवाड़ा
14 सितंबर से 28 सितंबर 2025
प्रियांशु गजेंद्र
अशोक चारण
शम्भू शिखर
राव अजात शत्रु
पद्मिनी शर्मा
काव्यांजलि
15.09.2025

MBA

ANURAG THAKUR

ARNAB
GOSWAMI

अभियान
JAGDISH SINGH KHEHAR
ANURAG THAKUR

LALU PRASAD YADAV
SASMIT PATRA

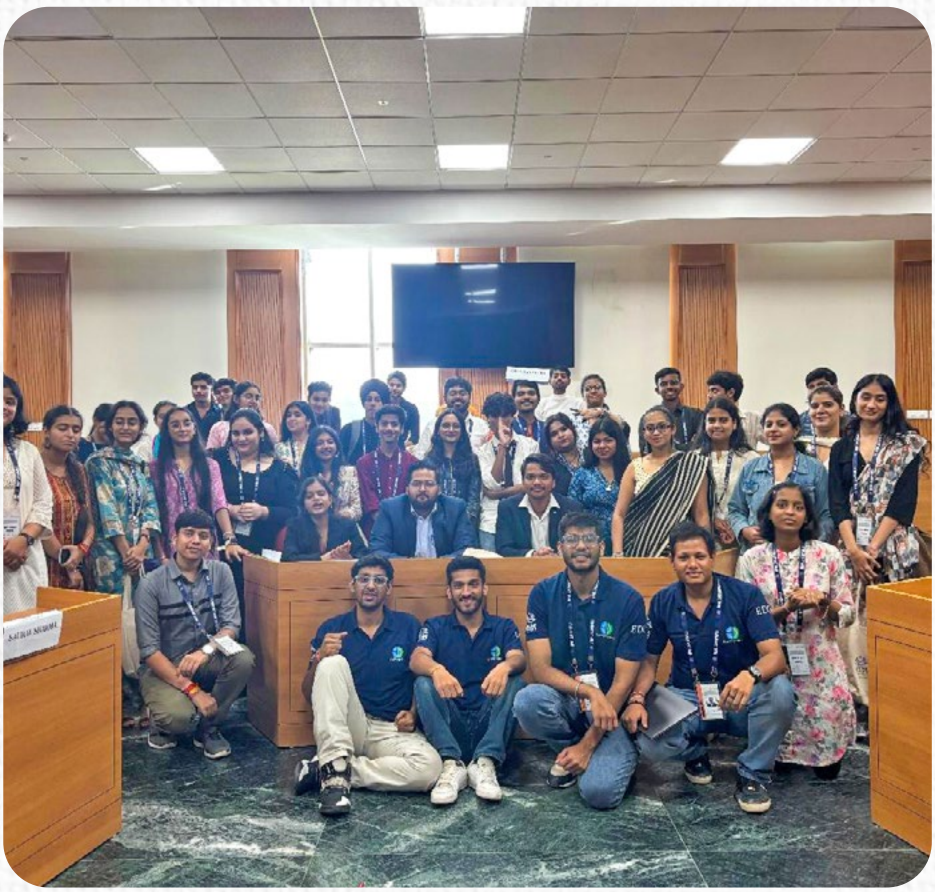

JITAN RAM MANJHI

SANJIV KHANNA
ACHARYA PRASHANT
AMITABH BACHCHAN
ANAND RANGANATHAN

सर्वदलीय बैठक
KIREN RIJIJU
BJP

SUDHANSHU
TRIVEDI
AROON PURI

NARENDRA MODI

EFMD
MBA

EFMD ACCREDITED
MBA

हिंदी पखवाड़ा

पुरस्कार वितरण समारोह

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू
Indian Institute of Management Jammu
EFMD
MBA
हिंदी पखवाड़ा
14 सितंबर से 28 सितंबर 2025
कवि सम्मेलन
पुस्तक समीक्षा व चर्चा
हिंदी कविता पाठ

हिंदी पखवाड़ा
14 सितंबर से 28 सितंबर 2025

हिंदी पखवाड़ा
14 सितंबर से 28 सितंबर 2025

हिंदी पखवाड़ा

वर्ष 2025-2026 में आयोजित हिंदी कार्यशाला

30.05.2025: भारतीय प्रबंधन संस्थान, जम्मू में नोटिंग, ड्राफ्टिंग एवं यूनिकोड पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

04 -08 अगस्त 2025: भारतीय प्रबंधन संस्थान, जम्मू में 5 दिवसीय हिंदी शब्द संसाधन / हिंदी टंकण प्रशिक्षण कार्यक्रम

22.12.2025: भारतीय प्रबंधन संस्थान, जम्मू में हिंदी शब्द संसाधन / हिंदी टंकण प्रशिक्षण कार्यक्रम

शिक्षकों और कर्मचारियों को सिखाई हिंदी में फाइलों की नोटिंग और ड्राफ्टिंग

आइआइएम जम्मू में हिंदी कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागी। सौ.: आइआइएम

अमर उजाला ब्यूरो

जम्मू। भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम) जम्मू के अगस्त्य कक्ष में शुक्रवार को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप प्रशासनिक और तकनीकी संचार में हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देना था। इसमें शिक्षकों और कर्मचारियों को हिंदी में फाइलों की नोटिंग, ड्राफ्टिंग और टाइपिंग पर उपयोगी जानकारी दी गई।

कार्यशाला का संचालन हिंदी शिक्षण योजना के सहायक निदेशक संतोष कुमार ने किया। कार्यशाला की शुरुआत संस्थान के हिंदी राजभाषा अधिकारी आशीष कुमार ईशर के स्वागत भाषण से हुई। उन्होंने मुख्य अतिथि का परिचय कराया और कार्यशाला के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के समापन पर उन्होंने सभी प्रतिभागियों और सहयोगियों का धन्यवाद किया। उन्होंने कार्यशाला के आयोजन के लिए संस्थान के निदेशक प्रोफेसर बी एस सहाय का भी आभार प्रकट किया। इस दौरान मीडिया एवं प्रकाशन समिति आनंदम के अध्यक्ष प्रोफेसर श्याम नारायण लाल सहित संस्थान के विभिन्न विभागों के अधिकारी और कर्मचारी शामिल हुए।

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू
EFMD ACCREDITED MBA
14 सितंबर से 28 सितंबर 2025

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू
Indian Institute of Management Jammu
EFMD ACCREDITED MBA
हिंदी पखवाड़ा
14 सितंबर से 28 सितंबर 2025
प्रियांशु गजेंद्र
अशोक चारण
शम्भू शिखर
राव अजात शत्रु
पद्मिनी शर्मा
काव्यांजलि
15.09.2025
मेरा मान है हिंदी, मेरी शान है हिंदी

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू
अखिल भारतीय
सर्वदलीय बैठक
IIM JAMMU
EFMD ACCREDITED MBA

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू
लोक सभा
IIM JAMMU
EFMD ACCREDITED MBA

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू
जनमंच
IIM JAMMU
10 Years
EFMD ACCREDITED
MBA

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू
भारतीय प्रेस सम्मेलन
IIM JAMMU
10 Years
EFMD ACCREDITED
MBA

IIM JAMMU
10 Years
भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू
भारतीय प्रेस सम्मेलन
EFMD ACCREDITED
MBA

IIM JAMMU
10 Years
भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू
लोक सभा
EFMD ACCREDITED
MBA
NARENDRA MODI

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू ने नटरंग के सहयोग से प्रशंसित हिंदी नाटक “आप हमारे हैं कौन” का मंचन किया।

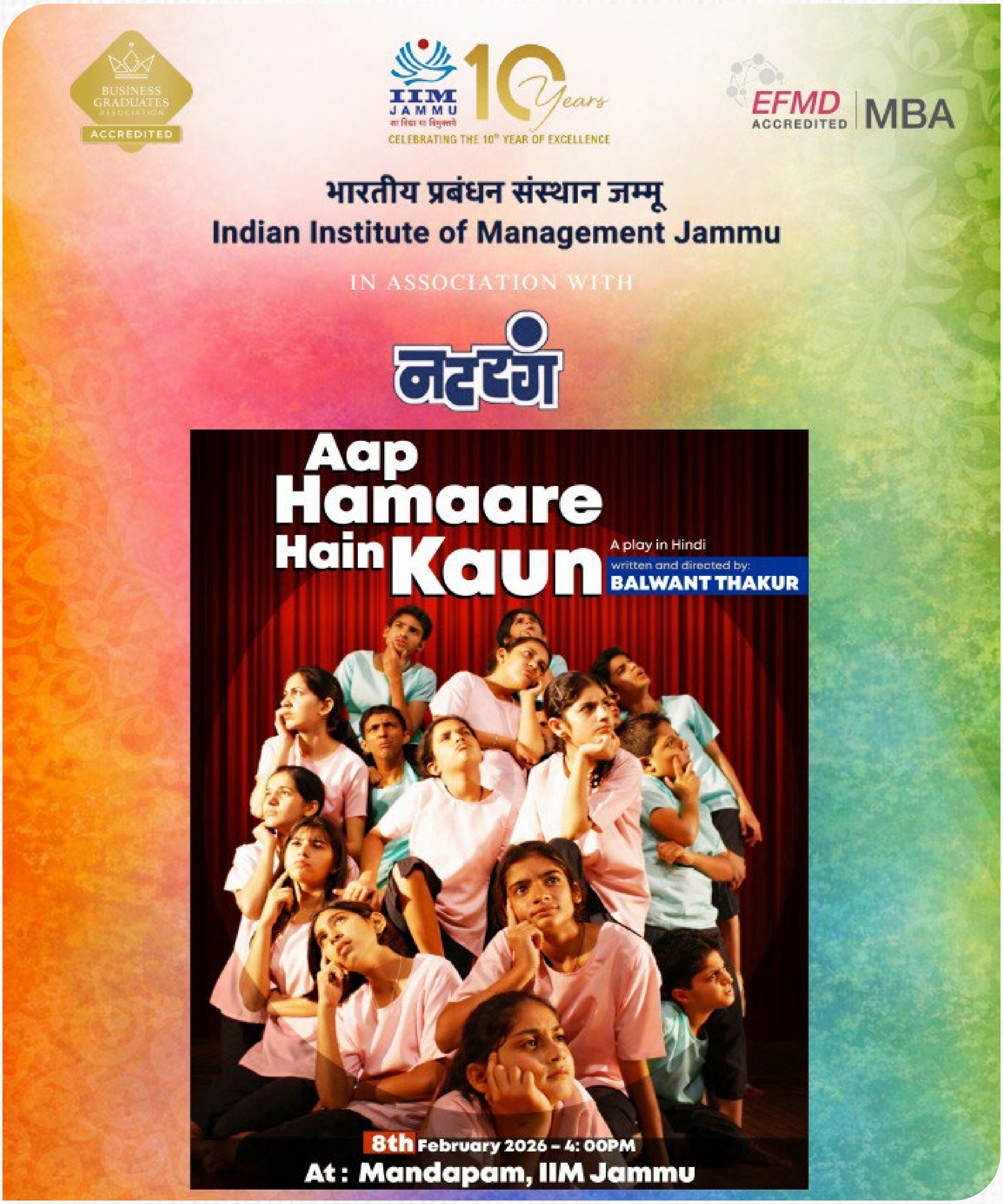

सीएसआईआर-आईआईआईएम
CSIR-IIIM

सत्यमेव जयते

विकसित भारत अभियान
1947 TO 2047

प्रमाण पत्र

नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति, जम्मू-014

संयोजक : अध्यक्षीय कार्यालय

सीएसआईआर-भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

अर्द्धवार्षिक बैठक : 23 जून, 2025

प्रमाणित किया जाता है कि

भारतीय प्रबंधन संस्थान, जम्मू

द्वारा भारत सरकार की राजभाषा नीति का उत्कृष्ट निष्पादन किया गया

सदस्य-सचिव

अध्यक्ष

सीएसआईआर-आईआईआईएम
CSIR-IIIM

सत्यमेव जयते

विकसित भारत अभियान
1947 TO 2047

प्रमाण पत्र

नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति, जम्मू

संयोजक : अध्यक्षीय कार्यालय

सीएसआईआर-भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

अर्द्धवार्षिक बैठक: 27 नवंबर, 2024

प्रमाणित किया जाता है कि

भारतीय प्रबंधन संस्थान, जम्मू

द्वारा भारत सरकार की राजभाषा नीति का उत्कृष्ट निष्पादन किया गया।

सदस्य/सचिव

अध्यक्ष

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू
Indian Institute of Management Jammu

सा विद्या या विमुक्तये

जगती, जम्मू-181221, भारत
Jagti, Jammu-181221, India
ई-मेल: | E-mail: hindipatrika@iimj.ac.in
फ़ोन नंबर: | Phone No.: 0191-2741400

cygnusadvertising.in